ओ३म्

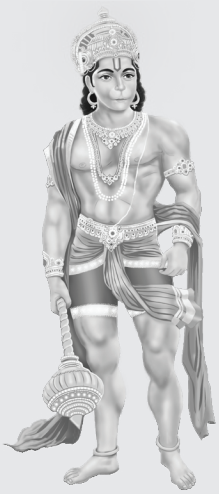

"श्रीहनुमच्चरितम्"

श्रीहनुमान का वास्तविक स्वरूप दर्शन

लेखक
आर्य रविदेव गुप्त

लेखक ➤ **आर्य रविदेव गुप्त**
संपादक ➤ आचार्य आनिल शास्त्री

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली– ११०००१

संपर्क ➤ दूरभाष : **०११.२३३६०१५०**
Website : **www.thearyasamaj.org**
E-mail : **aryasabha@yahoo.com**
Mobile : **९५४००४०३३९,**
Whatsapp No. **९५४००४५८९८**

प्रथम संस्करण ➤ **२०२२**

मुद्रक ➤ **विद्या दर्शन ऑफसेट प्रिंटर्स**

मूल्य ➤ **५०/-**

आई.एस.बी.एन. ➤ **९७८-८१-९५५२६३-४-५**

aryasamaj.org

विनम्र समर्पण

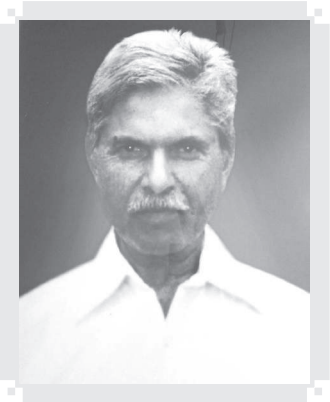

प्रस्तुत पुस्तक मेरे दिवंगत पूज्य पिताजी श्री मित्रसेन आर्य व पुज्या माताजी श्रीमती प्रेमवती आर्या को श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्मृतिशेष एक आर्य कर्मयोगी मेरे पिता ने मुझे जीवन में संघर्षों पर धैर्यपूर्वक विजय प्राप्त करने का स्वभाव एवं निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने का मंत्र देकर कृतार्थ किया। मेरा रोम–रोम उनका ऋणी है।

दिवंगत मेरी मां ने मुझे केवल जन्म ही नहीं दिया अपितु निरन्तर धैर्यपूर्वक आग्रह द्वारा मुझे अपने ही समान वेदों की ओर उन्मुख कर विद्वतनुचर बना दिया। उन्हीं की प्रेरणा व आशीर्वाद से ही इस अकिंचन के जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन व अनिर्वचनीय सत्य की जिज्ञासा ने जन्म लिया। एक व्यवसायी को अध्यवसायी बनाने की उनकी महती कृपा को मैं सादर नमन करता हूं।

विद्वदनुचर
–आर्य रविदेव गुप्त

मेरे मन की बात....

जन–जन के आराध्य श्रीराम का व्यक्तित्व और कृतित्व हनुमान जी के बिना अधूरा है, इसीलिए यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है–

"दुनिया चले न श्रीराम के बिना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना।"

विडंबना यह है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण, अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी श्री हनुमान के विषय में समाज में अत्यंत ही भ्रांतिपूर्ण एवं विवादास्पद कल्पनाएं प्रचलित हैं।

महर्षि बाल्मीकि प्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस एवं श्री हनुमानचालीसा एवं अन्य अनेकों ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन कर, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि उपरोक्त ग्रंथों में वर्णित श्री हनुमान के क्रिया–कलाप, कार्यकुशलता एवं ज्ञान–संपन्नता का इस बंदर वाली आकृति से किंचित् भी मेल प्रतीत नहीं होता, फिर भी संपूर्ण हिंदू समाज उनको उसी रूप में ही श्रद्धापूर्वक पूजने का परंपरागत रूप से अभ्यस्त हो गया है।

आश्चर्य का विषय यह भी है कि ध्यान से देखने पर यह बहुचर्चित पूंछ सहित श्रीहनुमान का स्वरूप भी प्रचलित मान्यता से असंगत लगता है। इस उदासीनतापूर्ण आचरण से, मेरे विचार में, महावीर हनुमान का सम्मान कम, अपमान अधिक होता है।

अतः एव मैंने अपने कर्त्तव्य की पुकार समझ, विशद अध्ययन द्वारा उपरोक्त सभी ग्रंथों के आवश्यक उदाहरण देकर यह सिद्ध करने का एक विनम्र प्रयास किया है कि सेवक–शिरोमणि, बजरंगबली

thearyasamaj.org

श्री हनुमान एक अद्वितीय महापुरुष थे न कि हमारी कल्पना में असावधानीपूर्वक चित्रित एक मनुष्येतर प्राणी।

मेरा यह सद्प्रयास किसी भी हनुमान–भक्त की श्रद्धा को ठेस पहुंचाना नहीं अपितु उनके महिमामय यथार्थ स्वरूप को सबके सम्मुख प्रस्तुत करने का है।

यदि ईश्वर की कृपा से शोध पूर्वक लिखित इस पुस्तक के पाठक सभी पूर्वाग्रहों को छोड़कर, विवेकपूर्ण विचार कर, अपनी प्रचलित मान्यता को संशोधित करने के लिए किंचित् भी बाध्यता अनुभव करेंगे तो मेरे इस संपूर्ण परिश्रम व पुस्तक की उपादेयता सार्थक होगी।

-आर्य रविदेव गुप्त-

चेयरमैन	–एकल विद्यालय फाउंडेशन आफ इंडिया,
चेयरमैन	–हिंद पुनरुत्थान संघ ट्रस्ट
संरक्षक	–आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली
अध्यक्ष	–दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल
अध्यक्ष	–राजार्य सभा– दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा
सचिव	–वेद संस्थान, नई दिल्ली

●●●

thearyasamaj.org

प्राक्कथन

'श्री हनुमच्चरितम्' पुस्तक एक अनूठे प्रयास के रूप में आपके हाथों में आई है। आज तक जो श्री हनुमान का विकृत स्वरूप उनके भक्तों के अंतर्मन में रहा है यह पुस्तक उस भ्रांति पूर्ण छवि को दूर करेगी। इस पुस्तक के लेखक आर्य रविदेव गुप्त जी के हृदय में श्री हनुमान एक महाशक्तिशाली, ज्ञानवान, श्रीरामदूत, अंजनी–पवन के पुत्र, एक महापुरूष रूप में विराजमान हैं न कि एक बंदर के रूप में। वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस तथा हनुमान–चालीसा के गहन अध्ययन के बाद उन्हें आभास हुआ कि इतना सर्वगुण सम्पन्न कोई मनुष्येतर प्राणी नहीं हो सकता।

अपने इसी विचार पर उन्होंने समय–समय पर श्रद्धालु समाज में व्याख्यान दिये। संयोग से मैं इन व्याख्यानों को सुनने का सुअवसर प्राप्त कर सकी। कोरोना संक्रमण काल में जब भारत के अतिरिक्त इटली, जर्मनी, लेबनान, इंग्लैंड व अमेरिका आदि अन्य देशों के प्रवासी भारतीयों ने अपने आराध्य ''ज्ञानगुणसागर–अतुलितबलधाम हनुमान जी'' के स्वरूप की सत्यता को सुना तो उन्होंने आर्य रविदेव जी से इस तथ्य को समस्त विश्व के समक्ष एक पुस्तक रूप में रखने हेतु लिपिबद्ध करने का अनुरोध किया।

इस पुस्तक लेखन के बारे में उन्होंने मुझसे, जो कि उनके परिवार की ही सदस्या हूं, चर्चा की। मैं लॉकडाउन में घर पर ही रहकर संगठन की ऑनलाइन बैठकों व कार्यक्रमों में भाग ले रही थी, तो मैंने भी इस पुस्तक लेखन के कार्य को उस समय का सर्वोत्तम सदुपयोग समझा। महावीर हनुमान के व्यक्तित्व की सत्यता सिद्ध करने का विचार आर्य रविदेव जी का ही था और मैंने उनको शब्द देकर पुस्तक का व्यवस्थित रूप दिया है।

इस पुस्तक के छोटे–बड़े १० अध्याय हैं और इन समस्त अध्यायों के एक–एक शब्द में, प्रत्येक बिंदु में तथा श्रीहनुमान के

द्वारा किये गये कार्यों में उनका एक महामानव रूप प्रकट होता है न कि एक पशु रूप बंदर का।

प्रथम अध्याय 'वानर राष्ट्र एवं संस्कृति' में हनुमान जी के अगणित गुणों का वर्णन है जो वानर संस्कृति के ध्वज – संवाहक हैं। यहां वानर का अर्थ 'वन में रहने वाले नर' बताते हुए वानरों की विभिन्न जातियों, वानर राष्ट्र तथा वानर सम्राट तथा उसके परिवार आदि का वर्णन है। बंदर का कोई राष्ट्र नहीं हो सकता न ही बन्दर एक राजा हो सकता है।

दूसरे अध्याय में "श्रीहनुमान का जन्म वृत्तांत" एवं महर्षि अगस्त्य के आश्रम में उनकी शिक्षा–दीक्षा का वर्णन है।

तृतीय व चतुर्थ अध्यायों में "हनुमान का सुग्रीव के साथ संबंध" एवं किष्किंधा कांड में सुग्रीव के साथ स्वयं भी निर्वासन स्वीकार कर ऋष्यमूक पर्वत पर आकर रहना, श्रीराम से भेंट व श्रीराम द्वारा लक्ष्मण को हनुमान के गुण बताना आदि संदर्भों का वर्णन है जो श्री हनुमान के व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है।

पुस्तक का पंचम अध्याय, रामायण के 'सुंदर कांड' को समर्पित है, जिसके नायक केवल हनुमान हैं। यह कांड हनुमान जी के लंका प्रस्थान से लेकर वापिस श्रीराम तक पहुंचने की यात्रा है जो हमें उनकी अतुलनीय शक्ति, विलक्षण बुद्धि–कौशल, अजेय योद्धा एवं संकट–मोचक रूप में उनके अद्वितीय व्यक्तित्व का दर्शन कराती है।

षष्ठम अध्याय में वानरजाति अर्थात् वनवासी मानवों के नाम–संबोधन, उनकी सुशिक्षित स्त्रियों के पूंछ–रहित मानव स्वरूप, वाली, सुग्रीव, अंगद एवं अन्य वानरों की सेना का बलशाली योद्धा रूप, नीति–कुशलता आदि के अनगिनत प्रसंग उनके मानव होने के प्रमाण हैं।

सप्तम अध्याय "पूंछ नही लांगूल–एक वस्त्राभूषण" में विभिन्न प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास है कि श्रीहनुमान

की पूंछ बंदर की पूंछ नहीं, अपितु पुरुषों द्वारा प्रयुक्त ''लांगूल'' रूप में वस्त्राभूषण है जो वानरजाति का राष्ट्रीय चिन्ह है।

'हनुमान जी के ऋणी कौन' शीर्षक वाले अष्टम अध्याय में तो अद्‌भुत चित्रण द्वारा रामायण के सभी पात्र अर्थात् वानरवंशी सुग्रीव, अंगद, तारा आदि के अतिरिक्त माता सीता, श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा संपूर्ण अयोध्यावासी श्रीहनुमान के ऋणी सिद्ध होते हैं। ऐसे महामानव श्रीहनुमान का बंदर होने का प्रश्न ही नहीं उठता—यह पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाता है।

पुस्तक का नवम अध्याय 'हनुमान—एक कुशल प्रबंधक' तो आधुनिक मैनेजमेन्ट (प्रबंधन) के विद्यार्थियों के लिये भी ग्राह्य है। इस अध्याय में श्री हनुमान में प्रबंधन के अनेकों गुणों को दर्शाया गया है, जिन्हें आजके विद्यार्थी स्वयं जीवन में धारण करके ''चुनौती को अवसर'' में बदलने का मंत्र जान सकते हैं।

अंत में दशम अध्याय में विचारणीय यक्ष प्रश्न द्वारा ग्रंथकार ने अपने हृदय की समस्त व्यथा को उडेलते हुए सभी प्रबुद्ध पाठकों से पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सम्यक चिंतन करने का विनम्र निवेदन किया है।

इस प्रकार हनुमान जी के महामानव स्वरूप को सिद्ध करने में आर्य रविदेव गुप्त जी के भावों को बिंदु रूप में प्राप्त कर, समझ कर मैंने इन्हें लेखनीबद्ध कर श्रीहनुमान के वास्तविक स्वरूप को प्रतिस्थापित करने में छोटी सी भूमिका निभाई है। आशा करती हूं आज सब भक्तजन, जो स्वयं भी भारतीय संस्कृति के संवाहक ही हैं, श्रीहनुमान के वास्तविक स्वरूप को हृदयंगम कर, उनके असंगत रूप की भ्रांति को निर्मूल कर अपने आराध्य का मान बढाएंगे।

डा० रुकमणी गुप्ता
सम्पादिका—'वनांचल की पाती'
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

●●●

आभार-अभिनन्दन

प्रस्तुत पुस्तक आपके हाथों में पहुंचने का मुझे अत्यन्त संतोष है। इसकी विषय वस्तु लंबे समय से मेरे मन में कौंध रही थी। परंतु उन विचारों को लेखनीबद्ध करने का न अवकाश मिल पा रहा था और न ही अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्द।

ईश्वर की कृपा से इन विचारों को, निरंतर मेरी राम कथाओं में समय–समय पर सुनकर, सहमति व्यक्त करते हुए डा0 रूकमणी जी ने मुझे इनको पुस्तकाकार में प्रकाशित कर जन–जन तक पहुंचाने का परामर्श दिया।

बंधुओं ! वक्ता सामान्यतः लेखक भी हो यह असामान्य है। मेरे प्रस्ताव पर उन्होंने मुझे लेखन का भार स्वयं लेने की सहमति भी दी। बस मानों ''विचारों को पंख लग गए।'' विचार–विमर्श करते–करते मेरे मन की बात शब्दों का आकार लेने लगी। पुनः रामचरितमानस, वाल्मीकि रामायण आदि ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन आरंभ हो गया। कुछ मास में सारा कथानक डा0 रूकमणी जी के हाथों लिपिबद्ध होकर पुस्तकाकार लेने लगा। अनेकों नए तर्क व समाधान भी पुस्तक में समाहित होते गए।

अतिशयोक्ति न होगी कि डा0 रूकमणी जी, जो स्वयं संस्कृत में पी. एच. डी. हैं, के कठोर परिश्रम से ही यह कार्य पूरा हुआ। मैं उनका अपने अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूं।

thearyasamaj.org

मेरे भांजे डा0 सत्येन्द्र मित्तल, जो आई0आई0टी, रुड़की में वरिष्ठ प्रोफेसर हैं एवं स्वयं भी एक साहित्यकार हैं, ने अत्यधिक रुचि लेकर अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा इस पुस्तक के स्वरूप को संवारने में आशातीत परिश्रम किया है। एक अन्य साहित्यकार दम्पत्ति श्री संतोष कुमार शर्मा व डा0 इंदु शर्मा तथा अनुजवत प्रिय मयंकशेखर ने भी कुछ बहुमूल्य सुझाव दिए जो प्रसंगानुसार सम्मिलित किए गए। मैं इन सभी महानुभावों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

इस पुस्तक के टंकण को मेरे पुत्रवत प्रिय मनीष तिवारी ने अत्यंत मनोयोग से पूरा किया। मैं उनको अपना आशीर्वाद देता हूं।

अंत में मैं यही कहूंगा कि यह छोटी सी पुस्तिका अनेकों सहयोगियों के सम्मिलित पुरुषार्थ का प्रतिफल है। अतः श्रेय पर भी सभी का समान अधिकार है।

विद्वदनुचर
–आर्य रविदेव गुप्त

●●●

thearyasamaj.org

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

✿ ओ३म् ✿

२३३६०१५० २३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक : ....

दिनांक : 23-04-2022

ज्ञानियों में अग्रगण्य महावीर हनुमान

त्रेतायुग में जन्मे महावीर हनुमान एक ऐसे धर्मात्मा महापुरुष थे जिनका आदर्श जीवन चरित्र मानवमात्र के लिए अत्यंत प्रेरणादाई है। आर्य समाज सफदरजंग एंक्लेव के प्रधान, आर्य श्री रविदेव गुप्त जी ने महावीर हनुमान जी के लगभग संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी प्रमाणिकता के साथ पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। इस पुस्तक का मैंने स्वयं आद्योपांत स्वाध्याय किया है। इसमें हनुमान जी वेदों के ज्ञाता, नीतिवान, दूरदर्शी, कुशल प्रवक्ता, पराक्रमी योद्धा, सफल सेनापति, आदर्श सेवाभावी, महापुरुष के रूप में सिद्ध होते हैं जिन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने कहा "तुम मम प्रिय भरत सम भाई" तुम भरत के समान मुझे प्रिय हो। ऐसे महापुरुष की समाज द्वारा पूंछ वाले बंदर के रूप में पूजा करना अनुचित है। महावीर हनुमान का शरीर वज्र के समान कठोर था, इसलिए उन्हें वज्रांगी भी कहा जाता है, गदा युद्ध और मल्ल युद्ध में वे निपुण थे, त्यागी, तपस्वी और योगी थे, यज्ञोपवीत धारण करते थे, ईश्वर के सच्चे उपासक थे हनुमान।

इस सारगर्भित पुस्तक की रचना के लिए मैं आर्य श्री रविदेव गुप्त जी को हार्दिक बधाई देता हूं, पुस्तक की भाषा,भाव शैली सरल और सहज है, हर आयुवर्ग के लिए पठनीय है, अत: पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वे महावीर हनुमान जी के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का उत्थान करें। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार के लिए आगे आएं, सेवा भाव हनुमान जी की महान प्रेरणा है, मानव सेवा के कार्यों में सब सहयोगी बनें।

बहुत-बहुत शुभकामनाओं सहित

धर्मपाल आर्य
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

thearyasamaj.org

श्रीमत्पंचखण्डपीठाधीश्वर समर्थगुरुपाद सद्गुरुदेव

आचार्य स्वामी श्री धर्मेन्द्र महाराज

मठ : 'पावनधाम' (पंचखण्डपीठ) विराटनगर (जिला जयपुर-राजस्थान) ३०३२०२

दूरभाष : ०१४१-२५५३५५४, २५५१२३४, ३२३३५५४

शुभाशंसा

कलिपावनावतार भगवान दयानन्द सरस्वती महाराज द्वारा फहरायी गयी पाखंडखंडिनी पताका के ध्वजावाहक, आर्य रविदेव गुप्त की अभिनव कृति 'श्री हनुमच्चरितम्' रुद्रावतार भगवान श्री वज्रांगदेव हनुमान महाप्रभु के विषय में फैली भ्रांतियों के निवारण का प्रशंसनीय प्रयास है.

केवल आर्यसमाज के सदस्यों के ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण हिन्दू श्रद्धालुओं में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए.

सभी आर्यजनों को पावनधाम विराट नगर में, भीमगिरि पर्वत शिखर पर स्थापित, विश्व के प्रथम मानवरूप श्री हनुमान-विग्रह के दर्शन करने चाहिए.

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संकल्प इससे दृढ़ होगा.

शुभकामनाओं सहित,

श्री धर्मेन्द्र

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी संवत २०७९
(१९ मई २०२२)

ओ३म्

पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक
S.No. : .....

दिनांक
Dated : १८.०६.२०२२

शुभाशंसा

महापुरुष किसी भी समाज का गौरव होते हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सभी के लिए अनुकरणीय होता है। न केवल जीवित रहते हुए अपितु जीवनोपरान्त भी वे मानवजाति के पथप्रदर्शक होते हैं। उनका यशःशरीर सदा अमर रहता है तथा विचारपद्धति भावी पीढ़ियों को अनुप्राणित करती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के परम भक्त महावीर श्री हनुमान भी ऐसे ही अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी हैं जो हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं, किन्तु ऐसे दिव्य महापुरुष के विषय में समाज में अनेकविध भ्रान्तियाँ प्रचलित है जोकि अत्यन्त खेदपूर्ण है।

आचार्य रविदेव गुप्त जी ने हनुमान जी से सम्बन्धित गहन अनुसंधान कर **'श्रीहनुमच्चरितम्'** नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया है। इसमें श्री हनुमान के जीवन से सम्बद्ध विविध भ्रान्तियों का वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक विवेचना के साथ निराकरण किया गया है। इस ग्रन्थ में श्री हनुमान को वेदज्ञ, ज्ञानयोगी, कर्मयोगी, नीतिज्ञ, मनोवैज्ञानिक, दूरदर्शक, कुशल प्रवक्ता व प्रबन्धक, बलवान् एवं पराक्रमी के रूप में चित्रित करते हुए उनके वास्तविक स्वरूप को प्रकाशित किया गया है। सम्माननीय रविदेव जी का यह प्रयास वास्तव में स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है।

मैं आशा करता हूँ कि श्री हनुमान के स्वरूप व जीवन से सम्बन्धित प्रचलित भ्रान्तियों का युक्तिपूर्ण व तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत करने वाली यह कृति सभी पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी।

अत्यन्त शुभकामना-सहित

शुभं भवतु

आचार्य बालकृष्ण

सम्पर्क कार्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)
Admin Office : Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
Tel. : 01334-240008, 244107, 248888 Fax : 01334-244805, 240664 E-mail : divyayoga@divyayoga.com Web : www.divyayoga.com

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

✿ ओ३म् ✿

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक : ....   दिनांक : 23-04-2022

शुभकामना संदेश

हमारा वैदिक धर्म और संस्कृति उतनी ही प्राचीन है जितना कि मानव जीवन। समय समय पर हमारे महापुरुषों ने अपने गौरवशाली धर्म और प्रेरणादाई संस्कृति के संवर्धन तथा संरक्षण के लिए तप, त्याग, साधना, सेवा और समर्पण का इतिहास रचा है। त्रेतायुग में जन्मे महावीर हनुमान का संपूर्ण जीवन इसका सशक्त प्रमाण है। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का विपत्ति के समय अद्भुत सूझ–बूझ, वीरता, धीरता और गंभीरता के साथ ऐसा पराक्रम दिखाया कि स्वयं श्रीराम ने उन्हें भरत के समान अपने प्रिय भाई के रूप में स्वीकार करके आनंद का अनुभव किया था। हनुमान जी की शिक्षाएं जितनी उस समय प्रासंगिक थी आज भी उतनी ही उपयोगी हैं। वेदों के ज्ञाता, याज्ञिक, धर्मज्ञ, अखंड ब्रह्मचारी, धर्मात्मा हनुमान जी का समस्त परिश्रम और पुरुषार्थ लोकोपकार के लिए समर्पित था। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व मानव समाज के लिए कल्याणकारी प्रेरणाओं की धरोहर है।

किंतु आधुनिक परिवेश में हनुमान जी के तथाकथित भक्तजन असाधारण प्रतिभा संपन्न महावीर हनुमान के सत्य स्वरूप को भूलकर एक वानर (बंदर) के रूप में उनकी पूजा करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। सप्ताह में मंगलवार और शनिवार दो दिन उनकी वानर रूप में पूजा, आरती करके वे संतुष्ट हो जाते हैं। पढे–लिखे समझदार ये लोग यह नहीं विचारते कि हम क्या कर रहे हैं? हमें क्या करना चाहिए? हम एक ऐसे महापुरुष के आदर्श जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं जो शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा से इतने महान बलवान परोपकारी थे कि युगों युगों तक उनकी यश कीर्ति अमर रहेगी। आर्य समाज के वरिष्ठ अधिकारी आर्य श्री रविदेव जी ने जन जन को महावीर हनुमान के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराने हेतु इस शोध परक पुस्तक की रचना करके प्रशंसनीय कार्य किया है। मैंने इस पुस्तक को पूरी सावधानी से पढ़ने का प्रयास कर पाया है कि इस पुस्तक से पाठकगण हनुमान जी के महान गुणों से लाभान्वित होंगे और सच्चे अर्थों में उनसे प्रेरणा लेकर जीवन पथ पर आगे बढेंगे। इस अनुपम पुस्तक रचना के लिए आर्य रविदेव जी को हार्दिक बधाई और सभी पाठकों के लिए शुभकामनाएं।

विनय आर्य
महामंत्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

theaaryasamaj.org

(7)

स्थापना: वसंत पंचमी, फरवरी 1948
दूरभाष: 25102316, 45595005
मो. 8826028505

॥ ओम् ॥
स्तुता मया वरदा वेद-माता। अथर्ववेदसंहिता 19-71(1)
वरदात्री वेदमाता की मैंने स्तुति की है।

संस्थापक :
स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

वेद-संस्थान

(पंजीकृत तथा आयकर-मुक्त दानाश्रित संस्था)
सी 22, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली 110 027

E-mail: vedic_science@yahoo.co.in Website : www.veda-sansthan.org

पत्र सं./32/5459 दिनांक : 23 अगस्त 2021

आदरणीय श्री रविदेव जी,

आपकी पुस्तक 'श्री हनुमच्चरितम्' के ड्राफ्ट का मैंने अध्ययन किया। आपने बहुत परिश्रम से शोध करते हुए इसे लिखा है और इसके लिए आपका साधुवाद है।

यह एक बहुत रोचक पुस्तक है। श्री हनुमान के प्रभावशाली व्यक्तित्व और कृतित्व का विस्तृत और प्रेरक वर्णन इसमें पढ़ने को मिला। उनकी जीवनी, सुग्रीव और राम के साथ उनके संबंध, उनकी विद्वत्ता, उनकी रणनीति-कुशलता, व्यवहार-कुशलता, दूरदर्शिता, इन सभी पक्षों और अन्य गुणों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

वाल्मीकि-रचित रामायण और तुलसीदास-रचित रामचरितमानस दोनों से उपयोगी संदर्भ लेकर अपना पक्ष प्रबल रूप से प्रस्तुत किया गया है। सुन्दरकाण्ड का महत्व भी बड़े प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक अनेक लोगों को बहुत पसंद आएगी। इसका प्रभूत प्रचार होना चाहिए।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

विनीत,

प्रद्युम्न शर्मा

(8)

ओ३म्
॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥
गुरुकुल-प्रभात-आश्रमः
भोला-झाल, टीकरी, मयराष्ट्रम्- २५०५०१ (उ.प्र.) दूरभाषः-08006702551
ईमेल - Gurukulprabhatashram@gmail.com वेब - http://prabhatashram.in

तिथि- ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी

सोमवार, २०७९

आर्य रविदेव गुप्त द्वारा लिखित पुस्तक 'श्रीहनुमच्चरितम्' श्री हनुमान जी के उदात्त चरित्र को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। लोग इसे पढ़कर भारतीय इतिहास को भी यथार्थ रूप में जान सकेंगे। जनता इससे अधिक से अधिक लाभ उठाए यही प्रभु से प्रार्थना है।

।। शेष दयामय प्रभु की अपार दया।।

thearyasamaj.org

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

कुलाधिपति,

गुरुकुल प्रभात आश्रम

आदर्श प्रेरणाओं के प्रकाश पुंज हैं- आर्य श्री रविदेव गुप्त

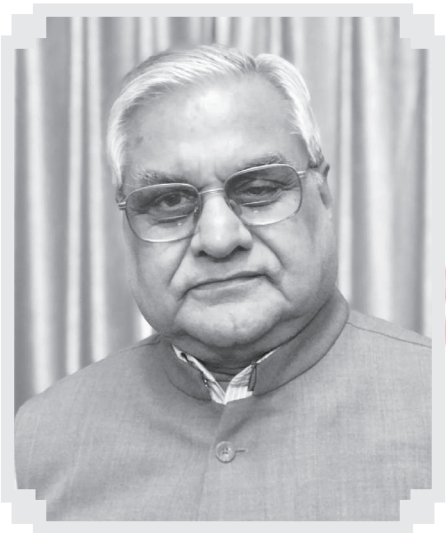

मानवीय चेतना एक ज्ञानमूलक मनोवृत्ति है। जिसका अर्थ है– सावधान होकर गति करना, विवेकशील होकर आगे बढ़ना और अपनी समय रूपी संपदा का सदुपयोग करना। क्योंकि सामान्यतया मनुष्य की चेतना का अपना स्तर होता है, जिसके अनुरूप उसके सारे क्रिया कलाप संभव होते हैं, किंतु जो व्यक्ति अपने अथक परिश्रम और पुरुषार्थ से तपोमय साधना पूर्ण जीवन जीता है उसकी दृष्टि इतनी तीक्ष्ण हो जाती है कि वह हर स्थिति परिस्थिति में मानव कल्याण की केवल कल्पना ही नहीं करता अपितु शिव संकल्पों को साकार कर दिखाता है। आर्य श्री रविदेव गुप्त जी एक ऐसी ही विलक्षण प्रतिभा संपन्न महान विभूति हैं जो नित–निरंतर राष्ट्र और मानव सेवा के प्रेरक कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आर्य रविदेव गुप्त जी का जन्म ९ सितम्बर १९४३ को सहारनपुर उत्तर प्रदेश के एक सुसंपन्न परिवार में हुआ। आपके पूज्य पिता श्री मित्रसैन आर्य जी एवं पूज्या माता श्रीमती प्रेमवती जी के द्वारा प्रदत्त दिव्य संस्कारों को ही आप अपने जीवन की समस्त उपलब्धियों और सफलताओं का प्रमुख आधार मानते हैं। आरंभिक शिक्षा प्राप्त कर आपने उच्च शिक्षा के लिए कठोर परिश्रम और पुरुषार्थ किया। इस विषय में आपकी अनुभवपूर्ण मान्यता है कि जो व्यक्ति कठिन मार्ग पर हिम्मत और साहस के साथ चलता है उसका जीवन सरल और सफल होता है किंतु इसके विपरीत जो जीवन जीने के सरल रास्ते खोजता है उसका जीवन कठिनाइयों से भर जाता है। अतः आपने अपने विद्यार्थी जीवन में किए तप के परिणाम स्वरूप एम. काम, एल. एलबी, एफ. सी. एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। आज ८० वर्ष की आयु में भी आप स्वयं को विद्यार्थी मानते हैं और वेद, उपनिषद, रामायण, गीता आदि शास्त्रों का शोधपरक स्वाध्याय और चिंतन मनन नियमपूर्वक करते हैं। आप अपने स्वाध्याय, साधना के तपोबल को भी मानव समाज के उत्थान और कल्याणार्थ राम कथा और वेद प्रवचनों के रूप में प्रस्तुत कर लोकोपकार करते हैं। आपके प्रवचनों को मैंने स्वयं कई बार श्रवण किया है, आपकी भाषा, भाव, शैली इतनी सरल, सहज और सटीक होती है कि वह हर आयुवर्ग तथा हर स्तर के श्रोता को लाभन्वित करती है। आप अपने प्रवचन में विषयांतर नहीं होते और मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शो पर तो आपका उपदेश, संदेश अत्यंत प्रेरक तथा स्तुत्य सिद्ध होता है।

वर्तमान में आप ट्राईकान मशीन प्राइवेट लिमि. के चैयरमैन हैं, यह कंपनी कंक्रीट के उपकरणों और हाईवे प्रोजैक्टस के लिए

प्लेसर एक्सेसरीज का निर्माण करती है। एकल विद्यालय फाउंडेशन आफ इंडिया के आप चैयरमैन हैं, हिंद पुनरुत्थान संघ ट्रस्ट के आप चैयरमैन हैं, आर्य समाज सफदरजंग एंक्लेव के आप संरक्षक हैं, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के आप अध्यक्ष हैं, आर्य केंद्रीय सभा की राजार्य सभा के अध्यक्ष हैं, वेद संस्थान नई दिल्ली के आप महामंत्री हैं, इसके अतिरिक्त अनेक अन्य संस्थाओं और संगठनों के भी अघोषित मार्गदर्शक तथा सहयोगी की भूमिका का सहर्ष निर्वहन कर रहे हैं। यहां पर यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा कि व्यक्ति एक, कार्य अनेक, किंतु फिर भी हंसता–मुस्कराता चेहरा, वाणी में मधुरता, परोपकार की प्रेरणा देते हुए हाथ, कल्याण की राह पर बढ़ते हुए कदम, न कोई थकावट, न रुकावट, न तनाव, न चिंता और न भय, बस मानव सेवा के पथ पर आगे बढ़ते ही जाना .... एक ऐसे अनोखे, अनूठे व्यक्तिव और महान कृतित्व के धनी आर्य रविदेव गुप्त जी के जीवन पर लिखने को तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है, लेकिन संक्षेप में यही कहूंगा कि आपका जीवन एक आदर्श नियम, अनुशासन और व्यवस्था की डोर में बंधा प्रेरणाओं का प्रकाश पुंज है, एक प्रेरक कविता है, काव्य है और महाकाव्य है। मेरा उपरोक्त कथन आर्य श्री रविदेव गुप्त जी से परिचित महानुभावों को भी अवश्य उचित प्रतीत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। आप नित निरंतर वसुधा पर प्रेमसुधा बरसाते रहें, मानव सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाते रहें, युवा पीढ़ी को सन्मार्ग दिखाते रहें, आपके स्वस्थ, सुखद, सुदीर्घ मंगलमय जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। धन्यवाद, आभार

–आचार्य अनिल शास्त्री

●●●

अनुक्रमणिका

- विनम्र समर्पण ३
- मेरे मन की बात ४
- प्राक्कथन ६
- आभार–अभिनंदन ९
- विभिन्न सम्मति–पत्र

अध्याय-१ वानर राष्ट्र एवं संस्कृति २४
- वानर कौन ?
- वानर राष्ट्र का विस्तार
- वानर सम्राट वाली
- सुग्रीव का राज्याभिषेक
- श्रीराम–वनवास की योजना–आर्य व वानर राष्ट्रों की संधि हेतु
- आर्यावर्त की स्थापना

अध्याय-२ श्रीहनुमान का जन्म-वृत्तांत ३०
- जन्म
- शिक्षा–दीक्षा
- कुशल सेनापति
- अनन्य सेवक

अध्याय-३ महावीर श्रीहनुमान का सुग्रीव के साथ संबंध ३४
- वाली – एक शक्तिशाली राजा
- सुग्रीव पर संदेह एवं राज्य से निष्कासन
- श्रीहनुमान द्वारा सुग्रीव का सहयोग
- वाली–वध एवं सुग्रीव का राज्याभिषेक

thearyasamaj.org

अध्याय-४ किष्किंधा कांड ३८

- सुग्रीव द्वारा शक्ति संयोजन
- सीता–हरण
- हनुमान की दूरदर्शिता
- श्रीराम से भेंट
- श्रीराम द्वारा लक्ष्मण का संशय – निवारण
- श्रीराम–सुग्रीव में मैत्री संबंध की स्थापना
- सुग्रीव के प्रति कर्त्तव्यपरायणता
- सुग्रीव का अतिशय विश्वास

अध्याय-५ सुंदरकांड ४६

- सुंदरकांड ही नाम क्यों ?
- हनुमान के कर्मों का सौंदर्य :–
  - चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता
  - परिस्थिति – अनुकूल व्यवहार
  - त्रुटिहीन, संयमी व्यक्तित्व
  - अद्वितीय रणनीति निपुणता
  - पूर्ण आत्म–नियंत्रण
  - मनोविज्ञानी
  - प्रत्युत्पन्न मति
  - आश्वस्ति–पूर्ण व्यवहार
  - निर्दिष्ट दायित्व से भी बढ़कर उद्यमिता
  - अतिशय निर्भीकता
  - अजेय योद्धा
  - अप्रतिम कर्त्तव्य–बोध
- निष्कर्ष

अध्याय-६ वानर जाति एवं श्रीहनुमान का स्वरूप-दर्शन ५४

- क्या हनुमान बंदर थे ?

theaaryasamaj.org

- वानर जाति
- मानवीय लक्षण :–
  - मानवीय आकृति
  - वानर जाति की उपजातियां
  - नाम संबोधन
  - स्त्रियों का मानव स्वरूप
  - सुशिक्षित स्त्रियां
  - मानवीय व्यवहार
- शूरवीर योद्धा
- विश्वसनीयता
- शास्त्रों के ज्ञाता
- संस्कार संपन्न
- व्यवहार एंव नीति–कुशल
- किष्किंधा राज्य की भव्यता

अन्य वन्यजातियों की चर्चा

- गृद्धकूट के जटायु
- ऋक्षराज जाम्बवंत
- श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा अनुमोदन

अध्याय-७ 'पूंछ' नहीं लांगूल - एक वस्त्राभूषण ६६

- लांगूल – वानर जाति का राष्ट्रीय चिन्ह
- लांगूल – केवल पुरुषों द्वारा प्रयुक्त

अध्याय-८ श्रीहनुमान के ऋणी कौन ? ७०

- सुग्रीव
- अंगद
- तारा
- रूमा

thevyasamaj.org

- लक्ष्मण
- भरत
- विभीषण
- माता सीता
- श्रीराम
- हनुमान जी भी विभीषण के ऋणी
- निष्कर्ष

अध्याय-९ हनुमान -एक अनुपम प्रबंधक ८०
- ज्ञान व कर्म के मिश्रण
- सदा प्रसन्न
- सदा विजय के लिए आश्वस्त
- अतिशय आत्म–विश्वास
- सदा जीवन, उच्च विचार
- अत्यंत विनम्र
- सात्विक क्रोध
- व्यवहार निपुण
- लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ
- अमोघ बाण
- परिस्थिति अनुकूल व्यवहार
- अद्वितीय संयम
- मनोविज्ञान कुशल

अध्याय -१० विचारणीय यक्ष प्रश्न ८६

संदर्भ ग्रंथ सूची ८८

नये परिशिष्ट
- श्री हनुमान चालीसा ८९

aryasamaj.org

०१

वानर राष्ट्र एवं संस्कृति

बाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी के पश्चात् परम बलशाली महावीर हनुमान को स्मरण किया जाता है। 'हनुमान' शब्द के बोलने, सुनने अथवा मस्तिष्क में विचार मात्र आते ही एक ऐसे महापुरुष की छवि हमारे समक्ष उभर कर आती है जो बलवान्, विनम्र परन्तु दुष्टों – दानवों के लिए कठोर, ज्ञानवान्, चारों वेदों के ज्ञाता, रामसेवक हैं।

रामचरितमानस में सुदरकांड आरम्भ करने से पूर्व गोस्वामी तुलसीदास स्वयं निम्न प्रकार से श्रीहनुमान को नमन करते हैंः–

"अतुलितबलधामं हेमषैलाभदेहं, दनुजवनकृषानुं, ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीषं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।"

रामचरितमानस सुन्दरकांड श्लोक–३,

''अतुलबल के धाम, सोने के पर्वत के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी, वन को ध्वंस करने के लिए अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, श्री रघुनाथजी के प्रिय भक्त, पवनपुत्र श्रीहनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।''

हनुमानचालीसा में तुलसी इन्हीं भावों की पुष्टि पुनः इन शब्दों में करते हैंः–

"रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनीपुत्र पवनसुत नामा।।"

वानर कौन ?

कपिश्रेष्ठ महावीर हनुमान वानर संस्कृति के वज–संवाहक हैं। 'वानर' शब्द का साधारणतः अर्थ बंदर किया जाता है, जो सर्वथा अन्यायपूर्ण व अनुचित है। वा+नर अर्थात् वनों में रहने वाले नर

अर्थात मनुष्य जाति। जिस प्रकार पर्वत गिरि में रहने वाले गिरिजन, गिरिवासी हैं, उसी प्रकार वन में रहने वाले 'वानर' भी एक मनुष्य जाति ही है जो निरामिष भोजी है। उस त्रेताकाल में, संस्कृति चार प्रकार की दृष्टिगोचर होती है– सुर, आर्य, असुर एवं वानर। वनों में वानर, ऋक्ष, भील, गृद्ध, व्याघ्र, नील, आदि अनेकों जातियां निवास करती हैं जो सभी एक वानर राष्ट्र के अन्तर्गत हैं।

वानर राष्ट्र एवं विस्तार

वानर राष्ट्र का बहुत बड़ा विस्तार पढ़ने को मिलता है। वर्तमान के आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के भाग, इसके अतिरिक्त बर्मा, असम, मलाया, इन्डोनेशिया, जावा – सुमात्रा आदि देशों तक वानर राष्ट्र का फैलाव था। भारत के दंडकारण्य क्षेत्र में वानर जाति का ही राज था। वानर राष्ट्र की राजधानी किष्किन्धा थी जो आज के कर्नाटक के हम्पी (जिला बेल्लारी) में स्थित है। ऋष्यमूक पर्वत क्षेत्र में ही श्रीराम की सुग्रीव के सेनापति हनुमान से भेंट हुई थी। बाद में हनुमान जी के माध्यम से ही श्रीराम व सुग्रीव आपस में मिले तथा उनकी अटूट मैत्री हुई।

वानर सम्राट वाली

ऋक्षराज का ज्येष्ठ पुत्र वाली किष्किंधा का यशस्वी सम्राट था। वह गदा तथा मल्लयुद्ध में पारगंत था तथा बहुत ही बलशाली था। उसकी असुर राष्ट्र के राजा रावण से संधि हो गई थी यद्यपि

वह इससे पूर्व एक युद्ध में रावण को पराजित भी कर चुका था।

श्री हनुमान राजा वाली के ही सेनापति थे, परंतु वाली की दुर्मति एवं अन्यायपूर्ण निष्कासन के कारण उनके छोटे भाई सुग्रीव, वाली को छोड़कर, ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगे थे। वाली ने सुग्रीव की पत्नी रूमा को भी अपने ही अधीन कर लिया था। वाली की रावण से दुर्भाग्यपूर्ण मैत्री के कारण उपजे जन–असंतोष व सुग्रीव के साथ अन्याय के कारण हनुमान जी वाली को छोड़कर सुग्रीव के संग आ मिले।

तुलसी इसी प्रसंग को निम्न शब्दों में अनुमोदित कर रहे हैं:–

"महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।"

श्रीहनुमानचालीसा

सुग्रीव का राज्याभिषेक

वाली के राज्य क्षेत्र के अंतर्गत रतनपुर व महेंद्रपुर आदि कई छोटे–छोटे मांडलिक राज्य थे। रामायण में वर्णन आता है कि सुग्रीव से भेंट के पश्चात् श्रीराम ने उस क्षेत्र को वाली के आतंक से मुक्त करने के लिए वाली का वध किया जिसके परिणामस्वरूप सुग्रीव को उसका राज्य व अपनी पत्नी रूमा वापिस मिल गई। श्रीराम द्वारा सुग्रीव का राजा के रूप में अभिषेक हुआ तथा वाली के पुत्र अंगद को युवराज घोषित किया गया।

तुलसी फिर कह रहे हैं :–

"तुम उपकार सुग्रीवहीं कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा।।"

श्रीहनुमानचालीसा

thearyasamaj.org

श्रीराम वनवास योजना-आर्य व वानर राष्ट्रों की संधि हेतु

रामायण से संबंधित विविध ग्रंथों का अध्ययन करते हुए हमें अनेकों स्थानों पर यह पढ़ने को मिला कि श्रीराम–वनवास की योजना अकस्मात् घटित दुर्घटना नहीं अपितु ऋषियों की सुविचारित एक गुप्त योजना थी, जिसमें महारानी कैकेयी व स्वयं श्रीराम भी एक सहयोगी थे।

महर्षि अगस्त्य की आर्य व वानर राष्ट्रों की संधि कराकर असुर राष्ट्र पर विजय की योजना थी। इसी हेतु उन्होंने गुरु वशिष्ठ से मंत्रणा कर श्रीराम के वनवास की योजना बनाई थी।

मुनि विश्वामित्र व महर्षि वशिष्ठ ने भी आपसी वैर भुलाकर रामजी को तैयार किया जो विश्वामित्र के आश्रम में रहते हुए इन असुरों से मुठभेड़ कर चुके थे।

वीरांगना कैकेयी ने भी सारी स्थिति का सम्यक् आकलन कर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए समस्त भयंकर अपयश को भी अंगीकार कर इस संपूर्ण घटनाक्रम की सूत्रधार बनना स्वीकार किया।[1]

कालांतर में सीता–हरण के पश्चात् उसकी खोज में श्रीराम वन–वन घूमते हुए जब ऋष्यमूक पर्वत पर पहुंचे तब हनुमान के माध्यम से उनकी सुग्रीव से मैत्री हुई। फिर श्रीराम द्वारा वाली–वध, सुग्रीव को राज्य आदि कार्य संपन्न हुए। सुग्रीव के सहयोग से

1 संदर्भः– हिमालय के योगी मौनी बाबा द्वारा रचित ''मात कैकेयी'' ग्रंथ से उद्घृत

thearyasamaj.org

सीताजी की खोज हुई एवं रावण के यहां बंदी होने की सूचना प्राप्त हुई। रामजी के सीता को सम्मानपूर्वक लौटाने के प्रस्ताव को ठुकरा कर रावण ने स्वयं युद्ध को आमंत्रण दिया। परिणामस्वरूप रावण–वध, लंका–विजय एवं विभीषण को लंका का राज्य मिला। यह कहावत प्रसिद्ध ही है:–

''स्वयमेव मृगेन्द्रता''

''ईश्वर उन्हीं की सहायता करते हैं जो स्वंय की सहायता करते हैं।''

आर्यावर्त की स्थापना

ऋषियों की योजना से असुरों के नाश द्वारा संपूर्ण क्रांति नहीं अपितु संक्रान्ति का स्वप्न साकार हो गया। आर्य संस्कृति के केंद्र अयोध्या, वानर संस्कृति के केंद्र किष्किंधा एवं असुर संस्कृति के केंद्र लंका के बीच एक अभूतपूर्व मैत्री का संबध हो गया। अंततः एक विशाल भूखंड पर ''आर्यावर्त'' की स्थापना हो सकी।

thearyasamaj.org

●●●

०२

श्रीहनुमान का जन्म वृत्तांत

जन्म व विभिन्न नाम

ऋक्षराज के पुत्र सम्राट वाली के राज्य में रतनपुर राज्यमंडल के मांडलिक शासक प्रहलाद विद्याधर थे, जिनकी पत्नी केतुमती थी। उनके ज्येष्ठ पुत्र पवन का विवाह उसी क्षेत्र के महेंद्रपुर के मांडलिक राजा कुंजर की पुत्री अंजना से हुआ।

संभवतः त्रेता युग के इस अनुपम उदाहरण को ही आदर्श मानकर, द्वापर युग में श्रीकृष्ण एवं रूकमणी जी ने इसी प्रकार विवाहोपरान्त 12 वर्ष की कठोर ब्रह्मचर्य साधना की। फलस्वरूप उन्हें अत्यंत तेजस्वी एवं संस्कारयुक्त, स्वयं जैसे पुत्र–रत्न प्रद्युम्न की प्राप्ति हुई।

उपलब्ध इस विषय से संबंधित साहित्य से ज्ञात होता है कि विवाह के पश्चात् दम्पत्ति द्वारा 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य साधना के पश्चात् चैत्र पूर्णिमा मंगलवार को चित्रा नक्षत्र व मेष लग्न के योग में पुत्र हनुमान का जन्म हुआ।

हनुमान के पिता को 'केसरी' भी कहा जाता था, इसीलिए इन्हें केसरीनंदन भी कहा गया। हनुमान का शरीर बज्र के समान बलिष्ठ होने से वे पहले 'वज्रांगी' और फिर धीरे–धीरे उसी शब्द के अपभ्रंश 'बजरंगबली हनुमान' के नाम से प्रसिद्ध हुए। पवन का पर्यायवाची 'वायु' होने से वायुपुत्र व 'मरुत' होने से 'मारूतिनदंन' नाम भी प्रचलित है। उनकी दीर्घ हनु (ठोड़ी) होने के कारण उनका नाम हनुमान रखा गया।

हनुमान जी के पिता 'कपि' नामक वानर जाति के थे। इसी कारण हनुमान 'कपि' भी कहे गये।

thearyasamaj.org

तुलसी पुनः लिख रहे हैं :–

"को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।"

संकटमोचन हनुमानाष्टक–१

शिक्षा-दीक्षा

हनुमान जी के पिता पवन की शिक्षा महर्षि अगस्त्य के आश्रम में हुई थी। बालक हनुमान जी ने भी अगस्त्य ऋषि के आश्रम में उच्च शिक्षा–दीक्षा एवं युद्ध– कौशल का ज्ञान प्राप्त किया। वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि वे ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद के विद्वान थे तथा संस्कृत भाषा व व्याकरण में बहुत कुशल थे। महाबली हनुमान गदा एवं मल्लयुद्ध में भी बहुत प्रवीण थे। इस प्रकार चारों वेदों के अध्ययन व युद्ध–कौशल में प्रवीणता ने हनुमान को ब्राह्मण एवं क्षत्रिय वर्ण का एक अद्‌भुत संगम बना दिया।

कुशल सेनापति

श्री हनुमान यद्यपि वाली के सेनापति बने परंतु कालांतर में सुग्रीव के साथ ही वाली के राज्य को छोड़कर निर्वासित जीवन जी रहे थे। परिस्थितिवश श्रीराम से भेंट के पश्चात् उनके दिव्य व्यक्तित्व के प्रभाव में उन्होंने स्वयं को पूर्ण रूप से श्रीराम का अनन्य भक्त बना लिया एवं उनके शेष वनवासी जीवन के प्रत्येक कार्य, संघर्ष व विपत्ति में हनुमान ने उनका अभिन्न सहयोग किया। माता–सीता को ढूंढने से लेकर रामदूत के रूप में रावण के समक्ष जाना, लंका–दहन, लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लाने एवं रावण–वध तक जितनी भी कठिनाइयां आईं, उन सबके निवारण के लिए, अहंकार शून्य होकर स्वयं को समर्पित कर उन्होंने श्रीराम का अनुपम सहयोग किया

thearyasamaj.org

तथा स्वयं प्रभु–भक्ति, सेवा व दास्य भाव का ऐसा कीर्तिमान प्रस्तुत किया कि यह कहानी गाई जाने लगी कि

"दुनिया चले न श्रीराम के बिना, राम जी चलें न हनुमान के बिना।।"

सेवक की प्रभुता, प्रभु से भी अधिक

हनुमान जीवनभर श्रीराम के सेवक के रूप में रहे व उनकी अपने प्रभु के रूप में उपासना करते रहे परंतु आज हमें आश्चर्यजनक रूप से प्रभु से अधिक उनके सेवक की प्रभुता का अद्वितीय उदाहरण देखने को मिलता हैं। जहां श्रीराम अभिजात्य वर्ग के आराध्य हैं वहीं श्रीहनुमान जन–जन के उपास्य हैं। यह एक सर्वविदित सत्य है कि विश्व में हनुमान के मंदिर श्रीराम के मंदिरों से कहीं बहुत अधिक संख्या में मिलते हैं।

●●●

thearyasamaj.org

०३

महावीर हनुमान का सुग्रीव के साथ संबंध

वाली-एक शक्तिशाली राजा

वानरश्रेष्ठ 'ऋक्षराज' के दो पुत्र थे– ज्येष्ठ पुत्र वाली तथा अनुज पुत्र सुग्रीव। वाली की पत्नी, सुषेण वैद्य की पुत्री तारा तथा पुत्र अंगद था। सुग्रीव की पत्नी रूमा थी। वाली किष्किंधा का शक्तिशाली राजा और सुग्रीव युवराज के रूप में दोनों राजकाज संभालते थे। वाली अत्यंत बलशाली, शूरवीर, गदा एवं मल्लयुद्ध में पारंगत था।

रामायण की एक कथा के अनुसार, मायावी व दुंदुभि दो असुर भाई थे। महिषरूपी असुर दुंदुभि ने, अपनी शक्ति पर दंभ होने के कारण किष्किंधा के द्वार पर जाकर वाली को ललकारा। बाली के समझाने पर भी जब दुंदुभि नहीं माना तो बाली ने इसे आसानी से हराकर उसका वध कर दिया।

कुछ समय बाद दुंदुभि के भाई मायावी द्वारा वाली को युद्ध के लिए ललकारने पर वाली तथा सुग्रीव लड़ने के लिए गए। दोनों को आता देख मायावी वन की ओर भागा तथा एक गुफा में छिप गया। वाली भी सुग्रीव को गुफा के बाहर खड़ा करके स्वयं गुफा में घुस गया। कई दिन तक वाली के गुफा से बाहर न निकलने पर सुग्रीव ने वाली को मृत समझकर गुफा को एक शिला से ढक दिया और वापिस चला गया। कुछ दिन प्रतीक्षा के बाद राज्य के राजा–विहीन होने पर मंत्रियों के आग्रह पर सुग्रीव ने राज्य को संभाल लिया।

thearyasamaj.org

सुग्रीव पर संदेह एवं राज्य से निष्कासन

उधर वाली गुफा में मायावी को ढूंढकर, उसका वध कर जब कुछ दिनों बाद वापिस आया तो वहां सुग्रीव को न पाकर किष्किंधा आया। सुग्रीव को राज्य करते देख उसने समझा कि सुग्रीव लालच में आकर मुझे वहां छोड़कर यहां आकर राज्य पर बैठ गया है। क्रोधित वाली ने उसे दंड देने के लिए उसकी अनेक प्रकार से प्रताड़ना की। प्राणघातक हमला होने पर सुग्रीव भय के कारण ऋष्यमूक पर्वत पर आकर छिप गया। उसकी संपत्ति व स्त्री भी वाली के पास ही रह गई।

इसी प्रकार रामायण के एक अन्य प्रसंग के अनुसार एक बार रावण ने अकेले वाली को युद्ध के लिए ललकारा था। इस युद्ध में रावण पराजित हुआ था। तब रावण ने अत्यंत कूटनीति से उससे संधि कर उसके क्षेत्र में अपनी बड़ी–बड़ी छावनियां बना ली थीं। अपने राजा की अकर्मण्यता के कारण वानर राष्ट्र के युवाओं में भी वाली के प्रति विद्रोह हो गया था।

हनुमान द्वारा सुग्रीव का सहयोग

वाली द्वारा सुग्रीव के निष्कासन एवं रावण से संधि के कारण उपजा असंतोष तथा युवा विद्रोह को नेतृत्व देने हेतु संकल्प ने हनुमान को, जो धर्मात्मा व सदाचारी थे, सुग्रीव के निकट ला दिया। हनुमान ने वाली के राज्य से स्वयं ही निष्कासन स्वीकार कर, निर्बल परंतु धर्मात्मा सुग्रीव के साथ रहने का निश्चय किया

thearyasamaj.org

तथा वे सुग्रीव के विश्वस्त सहयोगी व मंत्री बने।
तुलसीदास हनुमानचालीसा में उन्हें "कुमति निवार सुमति के संगी" कहते हैं।

वाली वध एवं सुग्रीव का राज्याभिषेक

हमें विदित ही है कि बाद में हनुमान द्वारा सुग्रीव की श्रीराम से भेंट कराने के फलस्वरूप सुग्रीव–वाली युद्ध में श्रीराम ने वाली का वध किया, सुग्रीव को किष्किंधा का राजा तथा वाली पुत्र अंगद को युवराज बनाया। हनुमान जी के सहयोग से ही सुग्रीव की श्रीराम से अटूट मैत्री बनी एवं सुग्रीव ने रावण वध में उनकी पूर्ण सहायता की।

●●●

thearyasamaj.org

०४

किष्किंधा कांड

सुग्रीव की श्रीराम से ऋष्यमूक पर्वत पर भेंट

महाशक्तिशाली वाली की रावण से संधि के कारण वानर राष्ट्र में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसी प्रकार मायावी नामक राक्षस के वध की घटना के बाद सुग्रीव के राज्य संभालने पर क्रोधवश जब वाली ने सुग्रीव को राज्य से निष्कासित कर दिया तब हनुमान ने स्वयं भी निष्कासन स्वीकार कर सुग्रीव का साथ दिया। सुग्रीव ने अपना राज्य व पत्नी दोनों को गंवा दिया। हनुमान का सहयोग प्राप्त कर सुग्रीव ने अपनी शक्ति को शनैः–शनैः संयोजित किया।

सीता-हरण

ऋष्यमूक पर्वत किष्किंधा नगरी से कुछ ही दूरी पर था और उस दंडकारण्य वन में ही स्थित था जहां श्रीराम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ आकर 'पंचवटी' में रूके थे। वहां वन में घूमते हुए अपने लक्ष्य के प्रति सजग श्रीराम ने अनेकों राक्षसों का वध किया था जो वाली से संधि के पश्चात् रावण द्वारा बनाई गई छावनियों में रह रहे थे। प्रत्येक राक्षस का संहार राक्षसराज रावण को एक परोक्ष चुनौती देता था। अतः रावण ने राम से बदला लेने हेतु सीता–हरण कर लिया।

राक्षसराज रावण छल से सीता–हरण के पश्चात् जब विमान से लंका की ओर जा रहा था, तब रास्ते में स्थित ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव व हनुमान ने अपने शिविर से आकाश मार्ग से जाती हुई किसी महिला का क्रंदन सुना। उस स्त्री ने 'हा–राम', हा–लक्ष्मण' का आर्तनाद करते हुए इन तेजस्वी पुरुषों को देखकर,

thearyasamaj.org

इनको लक्ष्य कर, अपने वस्त्र व आभूषण फेंके। निश्चय ही इन राजसी पुरुषों को देखकर सीता को विश्वास जगा होगा कि मेरे इन चिन्हों को ये सुरक्षित रखेंगे और यदि श्रीराम मुझे खोजते हुए इनसे भेंट करेंगे तो उन्हें इनसे मेरे जाने के मार्ग का अनुमान होगा। वास्तव में ऐसा हुआ भी।

हनुमान की दूरदर्शिता

इस घटना से राजनीति विशारद हनुमान ने तुरंत यह अनुमान लगाया कि ये स्त्री–हरण, राम द्वारा राक्षस–विनाश कार्यों का ही परिणाम है। बचपन में महर्षि अगस्त्य के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त करते हुए हनुमान उनसे यह वृतांत सुन चुके थे, तथा उनके मस्तिष्क में ऋषि वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने आए राम–लक्ष्मण की धुधंली छवि स्मृति रूप में भी विद्यमान थी। अतएव सुग्रीव को इन परिस्थितियों का संकेत कर अब वे राम– लक्ष्मण से भेंट की प्रतीक्षा करने लगे। यह निश्चित ही हनुमान की दूरदर्शिता का उदाहरण है।

हनुमान का यह भी अनुमान था कि राम भी अवश्य ही हमें खोज रहे होंगे। ऋषियों ने, जिन्होंने गुरु वशिष्ठ से मंत्रणा कर राक्षसों एवं दानवों के विनाश हेतु राम के निर्वासन की योजना बनाई थी, राम को भी अवश्य ही हनुमान, सुग्रीव–मिलन के संकेत दिए होंगे। दोनो को परस्पर एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता है और अंततः वह दिन आ ही गया।

श्रीराम से भेंट

दो तेजस्वी मानव आकृतियों को शैल शिखर की ओर बढ़ते

देखकर सुग्रीव एक बार तो थोड़े भयभीत हो गए। उन्होंने इतने तेजस्वी एवं बलशाली मानव पहले नहीं देखे थे। सुग्रीव को लगा कि कहीं वाली ने तो उनको मारने के लिए दोनों को न भेजा हो। वे भयभीत होकर स्वयं मलय पर्वत पर चले गए और हनुमान को ब्राह्मण वेष में जाकर उन तेजस्वी पुरुषों की जानकारी लेने के लिए कहा।

आपसी परामर्श से 'परीक्षण' की योजना कर ब्राह्मण वेश धारण कर हनुमान ने स्वयं जाकर उनसे भेंट की। उन्होंने सोचा, संभव है कि विपत्ति में वे दोनों मानव वाली से संधि करके आए हों, परंतु हनुमान ने बचपन की धुंधली स्मृति से राम–लक्ष्मण को पहचान कर भी अपने मनोभाव छिपाकर, प्रणाम कर, विनम्रता से उनका परिचय मांगा–

"को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा, छत्री रूप फिरहीं बन बीरा।।"

रामचरितमानस किष्किधां कांड. ४

हे वीर! सांवले और गौर शरीर वाले आप कौन हैं, जो क्षत्रिय रूप से वन में घूम रहे हैं। बाल्मीकि रामायण के अनुसार– "सूर्य व चंद्र के समान तेजस्वी सुवर्ण देह वाले आप कौन हैं"?
तब रामचंद्रजी ने कहा,

"कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु वचन मानि बन आए।।
राम नाम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सकुमारि सुहाई।। १.१
इहाँ हरी निसिचर वैदेही। विप्र फिरहिं हम खोजत तेहि।। १.२

रामचरितमानस, किष्किंधा कांड

"हम कौशलराज दशरथ जी के पुत्र हैं और पिता का वचन मानकर वन में आए हैं, राम–लक्ष्मण नाम के हम दोनों भाई हैं। वन

में किसी राक्षस ने मेरी पत्नी का हरण कर लिया है। हे ब्राह्मण! हम उसी को खोजते वन में घूम रहे हैं।"

हनुमान जी उनको पहचान कर, उनका उत्तर जानकर रोमांचित हो उठे और उनकी स्तुति करते हुए उनके चरणों में गिर पड़े। तब श्रीराम ने उन्हें उठाकर अंक में भर लिया, हृदय से लगा लिया और कहा "विप्रवर, आप ये क्या कर रहे हैं?" यद्यपि तब श्रीराम की भी धुंधली स्मृति जागृत होने लगी, तथापि उन्होंने हनुमान से परिचय मांगा। हनुमान ने अपना परिचय स्पष्ट शब्दों में बताया "हमारे राजा सुग्रीव धर्मात्मा हैं और आपसे मित्रता चाहते हैं। मैं पवनपुत्र हनुमान उनका मंत्री हूं।

श्रीराम द्वारा लक्ष्मण का संशय-निवारणः-

हनुमान के सद्व्यवहार, विनम्रता एवं शुद्ध संभाषण से प्रभावित होकर श्रीराम लक्ष्मण से हनुमान के विषय में कहते हैं, "देखो लक्ष्मण, ये वेदों के ज्ञाता लगते हैं। जिस दूत का ऐसा शुद्ध भाषण व व्यवहार हो उसके राजा के अवश्य ही सब कार्य सिद्ध होंगे।" बाल्मीकि लिखते हैं–

"नानृग्वेदविनीतस्य ना यजुर्वेदधारिणः।
ना सामवेद विदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।"

वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकांड ३.२८

"जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार सुंदर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।"

"नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपषब्दितम्।।"

किष्किन्धाकांड ३.२९

निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है क्योंकि बहुत सी बातें बोले जाने पर भी इनके मुख से कोई अशुद्ध शब्द नहीं निकला।

श्रीराम-सुग्रीव में मैत्री संबंध की स्थापना

श्रीराम–हनुमान में आत्मीय संबंध होने पर हनुमान ने श्रीराम को बताया कि इस ऋष्यमूक पर्वत पर वानरराज सुग्रीव रहते हैं। आप उनसे मित्रता कीजिए और उन्हें दीन जानकर निर्भय कर दीजिए। वह स्वयं भी लगभग इन्हीं परिस्थितियों में निर्वासित जीवन जी रहे हैं व उनकी पत्नी भी हर ली गई है, वह सीता जी की खोज में आपकी अवश्य सहायता करेंगे।

सुग्रीव ने भी हनुमान से सारा वृतांत सुनकर यह जान लिया कि ये दोनों कुमार वाली के द्वारा नहीं भेजे गए हैं तथा अपनी स्त्री की खोज में घूम रहे हैं। सुग्रीव की सहमति पाकर हनुमान जी ने दोनों ओर की सब कथा सुनाई एवं स्वयं पुरोहित बनकर राम व सुग्रीव की मैत्री के लिए अग्नि को साक्षी कर, दोनों से प्रदक्षिणा करवाकर यज्ञ का संपादन किया।

"पावक साखी देई करी, जोरी प्रीति दृढ़ाई"

रामचरितमानस किष्किधाकांड ३.४

जब लक्ष्मण जी ने श्रीराम की पत्नी जानकी जी के हरण

की कथा सुनाई, तब सुग्रीव के संकेत से हनुमान ने उन्हें सीता जी द्वारा गिराए वस्त्राभूषण दिखाए तथा उनको सीताजी की खोज का आश्वासन देते हुए पूरा सहयोग करने का वचन दिया।

"गगन पंथ देखी मैं जाता। परबस परी बहुत बिलपाता।। ४.२
"राम राम हा राम पुकारी। हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी।।
मांगा राम तुरत तेहि दीन्हा। पट उर लाई सोच अति कीन्हा।। ४.३

रामचरितमानस, किष्किधाकांड

सुग्रीव ने अपने भाई वाली द्वारा अपने ऊपर किए गए अत्याचारों के विषय में बताया कि उसके डर से वह यहां ऋष्यमूक पर्वत पर रहता है। सुग्रीव की व्यथा सुनकर श्रीराम ने वाली–वध कर उसे अभयदान दिया। तदनंतर श्रीराम की आज्ञा से लक्ष्मण जी सुग्रीव का राजतिलक कर, हनुमान के परामर्श से वाली के पुत्र अंगद को युवराज घोषित करते हैं।

"तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा।।"

श्रीहनुमानचालीसा

सुग्रीव के प्रति कर्त्तव्यपरायणता

हनुमान सुग्रीव के मंत्री होने के नाते अपने राजा सुग्रीव का सदैव ध्यान रखते थे। किष्किंधा का राज्य प्राप्त करने के पश्चात् प्रमादवश जब सुग्रीव रामकाज को भूल जाता है, लक्ष्मण जी क्रुद्ध हो किष्किंधा जाते हैं, तब सुग्रीव को लक्ष्मण के सामने आने का साहस नहीं होता। हनुमान जी ही उनको शांत करने हेतु वाली की पत्नी तारा को साथ लेकर लक्ष्मण जी से मिलते हैं–

"तारा सहित जाइ हनुमाना। चरन बंदौ प्रभु सुजस बखाना।। १९.२
करि विनती मंदिर लै आए। चरण पखारि पलंग बैठाए।।" १९.३

रामचरितमानस किष्किंधाकांड

महाराज के सम्मान की रक्षा हेतु, क्रोध शांत होने पर ही लक्ष्मण जी से सुग्रीव की भेंट कराते हैं। सुग्रीव ने लक्ष्मण जी से क्षमा याचना की तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी वानर सेना को विभिन्न समूहों में सीता की खोज में भेजा।

सुग्रीव का अतिशय विश्वास

इस प्रकार हनुमान जी की व्यवहार–कुशलता एवं कर्तव्यपरायणता के कारण ही सुग्रीव की हनुमान में दृढ़ प्रीति व अतिशय विश्वास इन शब्दों में व्यक्त होता है।

सुग्रीव कहते हैं:– "हे हनुमान! त्वं मनुष्येण विज्ञेया:"
अर्थात् "हे हनुमान! तुम नीतिशास्त्र के ज्ञाता, बल–बुद्धि–पराक्रम, देश–काल का अनुसरण व विवेकपूर्वक नीतिपूर्ण व्यवहार में दक्ष मनुष्य हो।"

●●●

thearyasamaj.org

०५

सुन्दरकांड

'सुंदरकांड' ही नाम क्यों?

बाल्मीकि रामायण के ६ कांड में से ५ कांड के नाम जीवन की अवस्था यथा बालकांड या स्थान विशेष के नाम यथा 'अयोध्या कांड, किष्किंधा कांड' आदि रखे गए हैं। क्या यह विचारणीय नहीं है कि केवल यह पंचम कांड ही सुंदरकांड क्यों कहा जाता है? जिसका न अवस्था और न ही स्थान से कोई संबंध है। महर्षि वाल्मीकि व गोस्वामी तुलसीदास दोनों ने इसी नाम को ही रखा।

इसका उत्तर यह है कि संपूर्ण कथा श्रीराम के गुणों तथा उनके पुरुषार्थ की परिचायक है, श्रीराम ही उन अध्यायों के नायक हैं, परंतु सुंदरकांड के नायक केवल और केवल हनुमान हैं। यह कांड हनुमान जी के लंका की ओर प्रस्थान, समुद्र पार करना, लंका नगरी में प्रवेश, विभीषण से भेंट, युक्तिपूर्वक सीताजी से भेंटकर, उनका विश्वास प्राप्त कर उन्हें श्रीराम की मुद्रिका देना, अक्षय कुमार का वध, मेघनाद के पाश में बंधकर रावण के समक्ष उपस्थित होना, फिर लंका–दहन और सीता माता से चूड़ामणि प्राप्त कर, लंका से वापस श्रीराम के पास पहुंचने की यात्रा है। ये प्रसंग हमें उनकी अतुलनीय शक्ति, अद्‌भुत विलक्षण बुद्धि–कौशल तथा उनके अजेय योद्धा व संकट–मोचक चरित्र का दर्शन कराते हैं।

सुंदरकांड अध्याय में हमें उनके अनुपम गुणों की, श्रीराम के सेवक के रूप में अंहकारशून्य कर्मों के सौंदर्य की एवं एक अद्वितीय व्यक्तित्व की छवि की स्पष्ट परिकल्पना मिलती है।

thearyasamaj.org

हनुमान के कर्मों का सौंदर्य

सुंदरकांड में हनुमान जी के अहंकार–शून्य कर्मों का अनुपम सौन्दर्य हमें उनके निम्न क्रिया–कलापों से स्पष्ट होता है:–

चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता

किष्किंधा कांड के अंत में, घटनाक्रम के चलते, लंका में सीता जी को ढूंढकर उनकी कुशलता जानने हेतु जाम्बवंत ने हनुमान को समुद्र लांघने की प्रेरणा दी तथा उनके स्वयं के जन्म के उद्देश्य का स्मरण कराया–

"कवन सो काज कठिन जग माहीं, जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।"

रामचरितमानस, सुन्दरकांड २९.३

यह सुनकर हनुमान जी को अपनी शक्ति का भान हुआ, वे एकदम सक्रिय हो गए– 'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहां विश्राम।"

परिस्थिति अनुकूल आचरण

उनमें परिस्थिति के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने की अद्भुत योग्यता थी। समय–समय पर उनके लघु, अतिलघु एवं विराट रूप देखने को मिलते हैं।

श्रीहनुमान के बहुरूप का अर्थ है आवश्यकता के अनुसार अपने व्यक्तित्व (Profile) को बदलने की क्षमता।

'सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे।।'

श्रीहनुमानचालीसा

त्रुटिहीन संयमी व्यक्तित्व

सीता माता की खोज करने रूपी रामकाज के प्रति ध्येयव्रती

thearyasamaj.org

होकर जब हनुमान रावण के अंतःपुर में सोई हुई अस्त–व्यस्त परिस्थिति में स्त्रियों को देखते हैं तो भी अखंड ब्रह्मचारी होने के कारण उनमें कोई काम–विकार नहीं जागा। उनके मन में यह प्रश्न उठ जाता है:–

"परदारावरोधस्य प्रसुप्तस्य निरीक्षणम्,
इदं खलु ममात्यर्थ धर्मलोपं करिष्यति।।"

वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकांड ११.३८

"पराई स्त्रियों को सोती अवस्था में देखना मेरा यह कर्म, धर्म द्वारा अर्जित मेरे पुण्य को नष्ट तो नहीं कर देगा?"

ऐसा प्रश्न मन में आने पर हनुमान को उसी समय अपने ही मन से समाधान मिल गया –

"मनो हि हेतुः सर्वेषामिन्द्रियाणां प्रवर्तने,
शुभाषुभं स्वावस्थासु तत्त्व मे सुव्यवस्थितम्।।"

वाल्मीकि रामायण सुन्दरकांड ११.४२

"अर्थात् इन्द्रियों को शुभाशुभ कार्यों में प्रेरित करने वाला मन मेरे वश में है। अतः मुझे इस अधर्माचरण से पाप नहीं लगेगा।"
यह घटना उनके विवेक, धर्म बुद्धि व अखंड ब्रह्मचर्य की द्योतक है।

अद्वितीय रणनीति निपुणता

राक्षसराज रावण की लंका में प्रवेश करने पर घूमते हुए राक्षसों के निवास के बीच उन्हें एक सुंदर महल दिखाई दिया, जिसमें बने एक मंदिर से 'राम–नाम' के स्मरण की आवाज सुनी–
"भवन एक पुनि दीख सुहावा, हरि मंदिर तहं भिन्न बनावा।" ४.४
"राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा, हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा।।" ५.२

रामचरितमानस, सुंदरकांड

thearyasamaj.org

इस प्रकार उन्होंने विभीषण की खोजकर, शत्रु के दुर्ग में छिद्र कर दिया। उसको प्रभु शरण में आने को उद्यत कर, रावण के राज दरबार में स्वयं जाने के लिए अनेक उपद्रव किए। विभीषण से परस्पर वार्तालाप कर वे उनके मित्र हो गए।

"तुम्हरो मंत्र विभीषन माना, लंकेष्वर भये सब जग जाना।"

श्रीहनुमानचालीसा

पूर्ण आत्म-नियंत्रण

विभीषण से सीता को ढूंढने की युक्ति पाकर हनुमान ने अशोक वाटिका में सीता जी के दर्शन कर रात्रि वृक्ष पर ही व्यतीत की। प्रातः रावण द्वारा सीता की प्रताड़ना तथा अन्य राक्षसियों की सीता को डराने संबंधी सारी बातचीत सुनी। हनुमान चाहते तो उसी समय नीचे उतरकर रावण का प्राणांत कर सकते थे, परंतु विपरीत परिणाम की आशंका से उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण कर निश्चित किया कि वे माता जानकी के प्रत्यक्ष दर्शन कर उन्हें श्रीराम द्वारा रावण के नाश तथा उनको ले जाने के प्रति आश्वस्त करके ही जाएंगे।

मनोविज्ञानी

हनुमान जी ने गम्भीर चिंतन कर सीता के समक्ष अचानक ही जाने से पहले सीता का विश्वास अर्जित करने का निश्चय किया, अन्यथा सीता सोच सकती थी कि रावण रूप बदलकर आ गया है। अतः वे वृक्ष पर बैठे–बैठे ही प्रचलित संस्कृत भाषा में श्रीराम का गुणगान करने लगे तथा अब तक की राम कथा कह सुनायी।

इस प्रसंग का तुलसीदास निम्न प्रकार से वर्णन करते हैं– सीताजी कह रही हैं– "जिसने मुझे कानों के लिए अमृत समान वचन सुनाए, वह मेरे सामने प्रकट हो।"

"श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई, कही सो प्रगट होति किन भाई।

रामचरितमानस, सुंदरकांड १२.४

आश्वस्तिपूर्ण व्यवहार

अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय देते हुए हनुमान जी वृक्ष से नीचे उतरकर सीता जी के सामने आए और श्रीराम द्वारा भेजी गई मुद्रिका देकर स्वयं को 'राम का दूत' सिद्ध किया।

"रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ही राम तुम्ह कहँ सहिदानी।।"

रामचरितमानस सुंदरकांड १२.७

बदले में उन्होंने माता सीता से चिन्ह स्वरूप चूड़ामणि श्रीराम व अन्य सभी को विश्वास दिलाने के लिए प्राप्त करने की प्रार्थना की :–

"मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसे रघुनायक मोहि दिन्हा।।"

रामचरितमानस सुंदरकांड २६.०१

प्रत्युत्पन्न मति

हनुमान जी में सीताजी को अशोक वाटिका से ही रावण से छिपाकर वापिस लाने का सामर्थ्य था, परंतु अपने इस सामर्थ्य को सीताजी द्वारा मर्यादा विरुद्ध जानकर उन्हें समझ आ गया कि श्रीराम–रावण युद्ध तो अवश्यंभावी है।

निर्दिष्ट दायित्व से भी बढ़कर उद्यमिता

हनुमान जी ने तुरंत निर्णय लिया कि अब स्वयं का तथा रावण का शक्ति–परीक्षण देना–लेना आवश्यक हो गया है। अतएव 'रामदूत' की भूमिका अंगीकार कर स्वयं रावण से भेंट करने की योजना बनाई। सीता जी ने उनको आशीर्वाद दिया :–

thearyasamaj.org

'अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता।'

श्रीहनुमानचालीसा

लंका में अशोक वाटिका में पेड़ उखाड़ने तथा वहां के रक्षक राक्षसों का एवं रावण के पुत्र अक्षय कुमार का संहार आदि उपद्रव करने के बाद हनुमान से युद्ध करने मेघनाद आया।

अतिशय निर्भीकता

हनुमान जी ने रावण के समक्ष प्रस्तुत होने के लिए स्वयं मेघनाद के नागपाश में बंधना स्वीकार किया। दरबार में स्वयं रावण को शांति का संदेश दिया, परंतु बात न मानने पर रावण को चेतावनी भी दी। क्रुद्ध रावण ने दरबार में हनुमान जी को मारने का आदेश दिया तब विभीषण ने 'दूत अवध्य होता है' का नियम स्मरण कराया। इस प्रकार विभीषण की मैत्री ही हनुमान की जान बचाने का कारण बनी।

अजेय योद्धा

लंका विध्वंस कर, हनुमान भगवान श्री राम की शक्ति का प्रमाण देकर, एवं अकेले ही रावण से आधा युद्ध जीतकर वापस आए तथा श्रीराम एवं समस्त सैनिकों को शुभ समाचार दिया। तब जामवन्त ने कहा–

'नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी, सहसहु मुख जाइ न बरनी।'

रामचरितमानस, सुंदरकांड २९.७

अप्रतिम कर्त्तव्यबोध एवं विनम्रता

हनुमान जी के मुख से लंका में हुए घटनाक्रम तथा सीता की खोज का वृतांत सुनकर श्रीराम हनुमान जी के ऋणी हो गए–

“रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतसम भाई।“

श्रीहनुमानचालीसा

“सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं, देखऊ करि विचार मन मोही।“

रामचरितमानस सुंदरकांड ३१.७

श्रीराम के मुख से ये शब्द सुनकर उन्हें स्वयं पर तनिक भी अहंकार नहीं हुआ। वे बोले –

“सो सब तव प्रताप रघुराई, नाथ न कछु मोरी प्रभुताई।
चरन परंक प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त।।“

रामचरितमानस सुंदरकांड ३२.१

हनुमान जी का यह उत्तर विनम्रता व निराभिमानिता की पराकाष्ठा है, एक उज्जवल कीर्तिमान है।

निष्कर्ष

हमें ‘सुंदर कांड’ का केवल पठन ही नहीं, अपितु इस पाठ को ग्रहण करने की आवश्यकता है अर्थात् हनुमान के गुणों को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।

‘सत्यं शिवं सुन्दरम्‘

सत्य कल्याणकारी होने से ही सुंदर होता है।

●●●

thearyasamaj.org

०६

वानरजाति एवं हनुमान का स्वरूप-दर्शन

क्या वानर हनुमान जी को बंदर रूप में प्रदर्शित करना उचित है ?- एक शोध

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र के पश्चात् रामायण में परम बलशाली महावीर हनुमान का ही स्मरण किया जाता है। हनुमान जी के चित्र व मूर्ति में उन्हें बंदर के रूप में दिखाया जाता है, जिनकी पूंछ भी है।

आइए, हम पूर्वाग्रहों को छोड़कर प्रमाणों के आधार पर स्वयं विश्लेषण करें कि क्या वास्तव में हनुमान जी ऐसे ही थे?

वानर जाति

प्रारंभ के दो अध्यायों में हमने 'वानर' शब्द का अर्थ 'वन में रहने वाले 'नर' के रूप में किया था। जैसे गिरि (पर्वत) में रहने वाले को गिरिजन कहते हैं, उसी प्रकार वन में फल, वनस्पति आदि पर निर्भर निरामिष भोजी मनुष्य जाति को 'वानर' कहते हैं। 'वानर' शब्द से यह अवश्य बोध होता है कि यह जाति वानरों (बंदर) के समान चपल, गतिमान व 'गति–गंध–नयो' होगी। इस विषय में निम्न प्रमाण दृष्टव्य हैं–

मानवीय लक्षण

१. मानवीय आकृति

❖ वानर वंश के सभी पात्र मनुष्यों के समान दो पैरों पर ही खड़े होकर चलते हैं, पशुओं के समान चार पैरों पर नहीं।

वानरजाति की उपजातियां

❖ वानर वंश को 'हरिगण' भी कहा जाता था जिसकी

अनेक उपशाखाएं राज्य में ही फैली हुई थीं। अकेले किष्किंधा राज्य में ही इनकी ग्यारह शाखाओं का उल्लेख है जिसमें :– वानर, ऋक्ष, व्याध्र, नील व गृद्ध आदि प्रमुखता से चर्चा में हैं।

❖ सुग्रीव केआह्वान पर राम–रावण युद्ध में सहयोग करने के लिये २०-२५ वानर वंश उपस्थित हुए थे जिनमें नल व नील नामक अभियन्ता भी थे।

२. नाम संबोधन

हनुमान जी की माता का नाम अंजनी तथा पिता का नाम पवन था। हम विचार करें कि पशुओं के नाम नहीं होते यथा केसरी, पवन, अंजनी, बाली, सुग्रीव, अंगद, हनुमान तारा, रूमा, वैद्य सुषेण आदि।

३. स्त्रियों का मानव स्वरूप

❖ हमारे चित्रकार बाली व सुग्रीव आदि को पशुवत बंदर के रूप में दिखाते हैं, परंतु उनकी पत्नियां मनुष्यजाति की स्त्रियां ही दिखाई गईं, मनुष्य जाति की पत्नियों के पति भी निश्चित रूप से मनुष्य ही होंगे और हनुमान जी उसी वानर जाति के शासक के महामंत्री थे, तो हनुमान जी भी मनुष्य सिद्ध हुए।

❖ सुग्रीव की पत्नी रूमा अत्यंत रूपवती बताई गई हैं व वानर राजवंश की सभी स्त्रियां ''भूषणोत्तम भूषिताः'' बताई गई हैं। किसी भी वानर स्त्री के पूंछ का कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

सुशिक्षित स्त्रियां

❖ श्रीराम द्वारा वाली–वध के समय जीवन के अंतिम क्षणों में

thearyasamaj.org

वाली ने अपनी पत्नी तारा के लिए सुग्रीव आदि से कहा था,''

''सुषेणदुहिता चेयमर्थ सूक्ष्मविनिष्चये।
औत्पातिके च विविधे सर्वतः परिनिष्ठिता।।'' २२.१३

''यदेषा साध्विति ब्रूयात् कार्य तन्मुक्तसंषयम्।
नहि तारामतं किंचिदन्यथा परिवर्तति।।'' २२.१४

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड

सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में निपुण है। जिस कार्य को अच्छा बताए उस कार्य को संदेहरहित होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।''

४. मानवीय व्यवहार

❖ यदि कोई बच्चा भीड़ में कहीं खो जाए तो क्या एक पशु उस बच्चे का फोटो देखकर भीड़ में से बच्चे को ढूंढकर ले आएगा? परंतु हनुमान जी सीता जी को ढूंढकर मुद्रिका एवं चूड़ामणि का आदान–प्रदान कर उनकी खबर लेकर आए। क्या एक मनुष्येतर प्राणी ऐसा महान् काम कर सकता है? निश्चित रूप से नहीं।

❖ अपने महाराज सुग्रीव के आदेश पर हनुमान राम व लक्ष्मण से भेंट करने विप्र वेश धारण कर गए थे। क्या मनुष्य के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए यह संभव है?

५. शूरवीर योद्धा

सम्राट बाली, सुग्रीव, हनुमान, अंगद एवं उनकी सेना में सभी शूरवीर योद्धा थे। तभी वे रावण जैसे महाबली राक्षस तथा उसकी सेना को मारने में सहायक होकर लंका–विजय में सफल हो सके।

freearyasamaj.org

६. विश्वसनीयता

अत्यंत ही प्रबल प्रमाण हमें मिलता है सीता के व्यवहार से, जब वे रावण के विमान में असहाय अवस्था में क्रंदन करती जा रही है व अपने आभूषण वस्त्र में बांधकर नीचे फेंक देती हैं। क्या देखकर फेंकती हैं ? उस भयंकर विपत्ति की अवस्था तुलसीदास जी फिर लिखते हैं:–

"मंत्रिन्ह सहित इहां एक बारा। बैठ रहेऊं मैं करत बिचारा।।" ४.२
"राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखी दीन्हेउ पट डारी।।" ४.३

रामचरितमानस कष्किंधाकांड

पाठकों! हृदय पर हाथ रखकर विचार करें कि महान बुद्धिमति सीता क्या वन्य पशुओं को देखकर अपने वस्त्राभूषण फेंक सकती थीं? स्वयं सुग्रीव कह रहे हैं कि एक बार जब मैं मंत्रियों के साथ बैठकर यहां विचार कर रहा था तभी हमने देखा कि विलाप करती जाती स्त्री ने हमें देखकर "राम–हा–राम" पुकार कर आभूषण की पोटली गिरा दी थी।

७. शास्त्रों के ज्ञाता

❖ किष्किंधा कांड में ऋष्यमूक पर्वत पर जब श्रीराम की हनुमान जी से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात् रामचंद्र जी ने लक्ष्मण को हनुमान के विषय में सम्मति देते हुए कहा –

"नानृग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेद धारिणः।
ना सामवेद विदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।। ३.२८
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपषब्दितम्।।" ३.२९

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड

अर्थात् ''ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं हैं तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने संपूर्ण व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया हैं, क्योंकि इतने समय तक बोलने में इन्होंने किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न शास्त्रीय पद्धति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी हृदय को हर्षित कर देती है।''

इस उदारण के बाद हम सोचें कि क्या मनुष्य के अतिरिक्त कोई प्राणी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर सकता है?

इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण में सुंदरकांड में हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले सोचते हैं–

''यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्,
रावण मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।। ३०.१८
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता।।'' ३०.१९

वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड

अर्थात ''यदि द्विज (ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूंगा तो सीता मुझे रावण समझकर भयभीत हो जाएगी और कोलाहल मचा देंगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान प्रचलित भाषा का प्रयोग करूंगा।'' निश्चय ही एक मनुष्य ही भाषाओं का ज्ञाता हो सकता है।

❖ 'हनुमान चालीसा' की सम्पूर्ण ४० चौपाइयों में हनुमान जी के अगणित गुणों ''ज्ञानगुनसागर, अतुलित-बलधाम, रामदूत,

विक्रम बजरंगी, तेजप्रताप, महाजगवंदन, विद्यावान" का वर्णन है जो एक महान् पुरूष के ही गुण हो सकते हैं।

८. संस्कार संपन्न

❖ वाली के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने कहा, 'मेरे ज्येष्ठ आर्य बंधु का संस्कार राज्य के नियमानुसार शास्त्र के अनुकूल किया जाए।"

❖ इसी प्रकार वाली–वध के पश्चात् सुग्रीव का राज्याभिषेक भी हवन व मंत्रों के उच्चारण से संपन्न हुआ।

❖ 'श्रीहनुमानचालीसा' में तुलसीदास जी हनुमान जी के व्यक्तित्व के विषय में कहते हैं,

"हाथ वज्र और ध्वजा विराजे। कांधे मूंज जनेऊ साजे।।"

अर्थात "हनुमान जी के कंधे पर मूंज का जनेऊ (यज्ञोपवीत) था, उनके एक हाथ में वज्र (गदा) और दूसरे हाथ में ध्वज रहता था।" यह संशय–रहित सिद्ध है कि मनुष्य के कंधे पर ही जनेऊ, हाथ में गदा और ध्वज हो सकता है।

❖ स्वयं सुग्रीव श्रीराम को अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि हमारी वंश परम्परा के अनुसार मेरा बड़ा भाई वाली ही राज्य सिंहासन पर प्रतिष्ठित है।

९. व्यवहार एवं नीति-कुशलता

❖ वाली के पुत्र अंगद का तो बाल्मीकि रामायण में विश्व के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में वर्णन हुआ है। हनुमान जी अंगद को अष्टांग बुद्धि से संपन्न, चार प्रकार के बल से युक्त एवं राजनीति के १४ गुणों से युक्त मानते थे। किष्किंधा ७४/२

thearyasamaj.org

❖ बुद्धि के आठ अंग हैं–

सुनने की इच्छा,
सुनना
सुनकर ग्रहण करना,
ग्रहण करके धारण करना,
ऊहापोह करना, अर्थ को ठीक से समझना
मनन करना
तत्त्वज्ञान से संपन्न होना।

❖ इसी प्रकार ४ प्रकार के बल हैं– साम, दाम, दंड, भेद
कुछ विद्वानों के मत में बाहुबल, मनोबल, उपायबल तथा बंधुबल– ये चार प्रकार के बल हैं।

राजनीति के १४ गुण हैं–

१- देशकाल का ज्ञान, २- दृढ़ता,
३- कष्ट–सहिष्णुता, ४- सर्वविज्ञानता,
५- दक्षता, ६- उत्साह
७- मंत्रगुप्ति, ८- एकवाक्यता
९- शूरता, १०- भक्तिज्ञान,
११- कृतज्ञता, १२- शरणागत–वत्सलता,
१३- गंभीरता, १४- अधर्म के प्रति क्रोध।

इतने गुणों को धारण करने वाला युवराज अंगद निश्चय ही एक श्रेष्ठ राजपुत्र था।

❖सीता की खोज में भटकते हुए श्रीराम व लक्ष्मण का राक्षस कबंध से सामना हुआ था। उसी ने मरते समय उन्हें सुग्रीव का परिचय देकर उससे मैत्री करने का परामर्श दिया था, चूंकि वह भी समान विपत्ति से ग्रस्त था।

thearyasamaj.org

"श्रूयतां राम वक्ष्यामि सुग्रीवो नाम वानरः।
भ्रात्रा निरस्तः क्रुद्धेन बालिना शक्रसूनुना।।"

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड ३७.३९

"हे राम सुनो! सुग्रीव नाम का एक वानर है। उसके भाई बाली ने क्रुद्ध होकर, उसे अपमानपूर्वक राज्य से निकाल दिया है।"

"वानरेन्द्रो महावीर्यस्तेजोवानमित प्रभः।
सत्यसन्धो विनीतष्च धृतिमान् मतिमान् महान।।"

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड ३७.४१

"वह वानरों का राजा सुग्रीव अत्यंत बलशाली, तेजस्वी, अमित प्रतापी, सत्यप्रतिज्ञ, विनीत, धैर्यवान व बड़ा बुद्धिमान है।"

मरणासन्न राक्षस कबंध का परामर्श सुनकर एवं, आश्वस्त होकर श्रीराम तत्काल लक्ष्मण से निम्न शब्दों द्वारा सुग्रीव के पास चलने के लिए कहते हैं

"यस्मिन् वसति धर्मात्मा सुग्रीवो सुमतः सुतः।
नित्यं बालिभयात् त्रस्तष्चतुर्भिः सह वानरैः।।"

वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड ३८.१७

अर्थात, आओ, लक्ष्मण, हम वहां चलते हैं जहां राजर्षिपुत्र धर्मात्मा सुग्रीव, वाली के भय से, अपने चार मंत्रियों के साथ निवास करते हैं। पाठकों, हम तनिक विचार करें कि ऐसे श्रेष्ठ गुणों से युक्त वानर जाति के बारे में हम अपनी असावधानी से कितना अन्याय करते हैं। जब सुग्रीव को लक्ष्मण के सामने आने का साहस नहीं होता तो हनुमान जी ही उनको शांत करने हेतु वाली की पत्नी तारा को साथ लेकर लक्ष्मण जी को मिलते हैंः–

"तारा सहित जाइ हनुमाना। चरन बंदौ प्रभु सुजस बखाना।।

रामचरितमानस किष्किंधाकांड १९.२

❖ पुनः कुछ समय बाद लक्ष्मण जी क्रोधित होकर सुग्रीव को चेतावनी देने जाते हैं तो तुलसीदास जी हनुमान जी की व्यवहार कुशलता की पुष्टि इस प्रकार करते हैं:–

"करि विनती मंदिर लै आए। चरन पखारि पलंग बैठाए।।"

रामचरितमानस किष्किंधाकांड, १९.३

❖ ऋक्ष जाति के जामवंत अत्यंत ही बुद्धिमान व नीति कुशल थे और इनकी रामायण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका दिखती है।

❖ इस वानर जाति के लिए बाल्मीकि रामायण में

- १०८० बार 'वानर' शब्द,
- ४२० बार 'कपि' शब्द व
- २४० बार 'प्लवग'

आदि गुणवाचक शब्दों का प्रयोग हुआ है जो उनकी विशेष कार्य–कुशलता के सूचक हैं।

१०. किष्किंधा राज्य की भव्यता

❖ सुग्रीव के राज्याभिषेक के लिए लक्ष्मण जी किष्किंधा नगरी में प्रविष्ट हुए तो उस नगरी की भव्यता की अनेक प्रकार से चर्चा हुई है।

"हृष्टपुष्ट जनाकीर्णा पताका ध्वज शोभिता।
बभूव नगरी रम्या किष्किन्धा गिरिगह्वरे।।"

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड २०.२१

हृष्टपुष्ट जनों से परिपूर्ण, ध्वजा व पताकाओं से अलंकृत, पर्वतों से घिरी किष्किंधा नगरी अत्यंत शोभायमान हो रही थी।

freeryasamaj.org

अन्य वन्य जातियां

गृद्धकूट के जटायु

हनुमान जी जिस प्रकार पशु नहीं थे उसी प्रकार जटायु भी गिद्ध नामक पक्षी नहीं थे। वानर वंश के अध्याय में हम बता चुके हैं कि वन में हरिगण अथवा हरिवंश के नाम से विख्यात वानर, ऋक्ष, व्याघ्र, नील, गिद्ध आदि अनेक प्रकार की मनुष्य जातियां निवास कर रही थी। जब रावण सीता का हरण कर आकाश मार्ग से जा रहा था तब गृद्धकूट के गृद्धराज जटायु को देखकर सीता ने अपनी सहायता के लिए उनको "आर्य एवं द्विज" कहकर संबोधित किया। ये शब्द पक्षु–पक्षी के सम्बोधन में नहीं कहे जाते। जटायु ने भी रावण को अपना परिचय देते हुए स्वयं को गृद्धकूट पर्वत का भूतपूर्व राजा बताया था

"जटायुः नाम्ना अहं गृध्रु राजो महाबलः"

वाल्मीकि रामायण अरण्यकांड ७०.४

अतः यह सिद्ध होता है कि जटायु पक्षी नहीं अपितु वीर योद्ध ा मनुष्य थे जो वृद्धावस्था में जंगल में रह रहे थे।

ऋक्षराज जाम्बवंत

इसी प्रकार लंकाकाण्ड में लक्ष्मण–मेघनाद युद्ध में लक्ष्मण जब घायल हो गए थे तब ऋक्षराज जाम्बवंत ने ही हनुमान को संजीवनी औषधि लाने की तरकीब सुझाई थी। युद्ध के समय किसी बुद्धिमान् व्यक्ति से ही सलाह ली जाती है, पशु–पक्षी बंदर, भालू आदि से नहीं।

महाभारत एवं परवर्ती काल में भी उल्लेखः-

महाभारत ग्रंथ में इन जनजातियों की चर्चा देखने को मिलती है, यथा

- 'आदि पर्व' में वानर किन्नर, यक्ष एव राक्षस आदि जातियों का उल्लेख है।

thearyasamaj.org

- ‘सभा पर्व‘ में भी यह पढने को मिलता है कि पांडवों ने चारों भाइयों को राजसूय यज्ञ के अंतर्गत सब दिशाओं में दिग्विजय के लिए भेजा था। सहदेव दक्षिण की ओर गए थे और वहां अन्य राज्यों के अतिरिक्त किष्किंधा में वानर राज्य को भी विजय किया था। आज भी राजस्थान व पंजाब में जाट समुदाय में वानर अथवा ‘‘बांदर गोत्र‘‘ पाया जाता है।

श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा अनुमोदन

- अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) के अध्यक्ष श्री नंद कुमार साईं भी अनुमोदन करते हैं किः–

‘‘वानर, गृद्ध व ऋक्ष आदि जनजातियों ने ही श्रीराम का रावण से युद्ध करने में सहयोग किया था।‘‘

- गोरक्षनाथ पीठ के पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने भी अलवर के मालावेड़ा में एक सभा में कहा था किः–

‘‘बजरंगबली एक ऐसे लोक देवता हैं जो स्वयं वनवासी हैं, गिरिवासी हैं। लोग सोचते हैं कि भगवान राम की सेना में वानर, भालू, गिद्ध थे। ओरांव आदिवासी जाति से संबद्ध लोगों द्वारा बोली जाने वाली कुरूख भाषा में गोत्र ‘टिग्गा‘ का अर्थ वानर होता है। कंवार आदिवासियों में, जिनसे मेरा संबंध है, ‘हनुमान‘ नामक एक गोत्र है।

इसी प्रकार ‘गिद्ध‘ कई अनुसूचित जनजातियों में एक गोत्र है। अतएव मेरा मानना है कि हनुमान आदिवासी समुदाय से थे और उन्होंने राम–रावण युद्ध में भगवान श्री राम का साथ दिया।‘‘

thearyasamaj.org

०७

पूंछ नहीं लांगूल-एक वस्त्राभूषण

यह एक अत्यंत ही उद्वेलित करने वाला प्रश्न है जिसके उत्तर में हम वाल्मीकि रामायण का निम्न प्रमाण देते हैं। विभीषण के कहने पर रावण ने हनुमान को प्राणदंड न देकर ऐसा कहाः–

"कपीनां किल लांगूलमिष्टं भवति भूषणम्।
तदस्य दीप्यतां शीघ्रं तेन दग्धेन गच्छतु।।"

वाल्मीकि रामायण सुंदरकांड ३७.३

अर्थात् "वानर जाति के लिए इनका लांगूल सबसे प्रिय प्रतीक व उत्तम आभूषण होता है। अतः इसके लांगूल को जला दो और जाने दो।"

पाठकगण! तनिक विचार करें कि लांगूल शरीर का अंग न होने के कारण हनुमान को शारीरिक नहीं प्रत्युत मानसिक कष्ट हुआ और इसीलिए प्रतिशोध के रूप में उन्होंने उस जली लांगूल से व्यापक अग्निकांड कर दिया।

"लांगूल"-वानर जाति का राष्ट्रीय चिन्ह

वाल्मीकि रामायण में वर्णित राक्षसराज रावण के उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'लांगूल' वानर जाति का राष्ट्रीय चिन्ह (Totem) था जिसकी रक्षा वे प्राणपण से करते थे।

इस विषय में एक अन्य वाल्मीकि रामायण के अनुवादक, सम्पादक व टिप्पणिकर्ता, परमहंस स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती स्वरचित टीका में अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहते हैं :–

♦ "प्रायः टीकाकारों ने लाङ्गूल का अर्थ 'पूंछ' किया है। परंतु यह अर्थ ठीक नहीं है। जब किष्किंधाकांड (२८ व २९) में हनुमान् को 'वेदादि शास्त्रों और व्याकरण का विद्वान बताया है तब उन्हें 'पूंछ वाला बंदर' कहना मूर्खता है। बाली सुग्रीव, अंगद आदि सभी मनुष्य थे इनके लिए 'आर्य' विशेषण का प्रयोग यत्र–तत्र हुआ है। तारा को मंत्रवित् कहा गया है।

एक बात बड़ी विचित्र है कि यह पूंछ पुरुषों के ही दिखाई गई है तारा, रुमा आदि वानर स्त्रियों के लिए कहीं भी पूंछ का उल्लेख नही हैं। क्या कहीं ऐसे बंदर भी होते हैं कि बंदरों के तो पूंछ हो और बंदरियों के पूंछ ही न हो?

लांगूल वानर जाति का राष्ट्रीय–चिन्ह (Totem) होने के कारण ही इसे ये लोग बड़ी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे तथा इसके अपमान को जातीय अपमान समझते थे। रावण ने हनुमान को अपमानित करने हेतु इसी राष्ट्रीय–चिन्ह को जलाने की आज्ञा प्रदान की थी।

आजकल भी देखने में आता हैं कि ग्वाले अपनी पगड़ी में मोर पंख लगा लेते है परंतु यह उनके शरीर का अंग नहीं होता। इसी प्रकार वानरजाति के लोग भी पूंछ सदृश कोई वस्तु लगा लेते थे। यह इनके शरीर का वास्तविक अंग नही था।"[2]

यह इनकी युद्ध की पोशाक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग था, यथा सिख समुदाय के लिए 'पगड़ी', ब्राह्मण के लिए 'शिखा व यज्ञोपवीत' आदि। महाराष्ट्र में आज भी लांग वाली धोती अथवा साड़ी का प्रचलन है।

लांगूल-केवल पुरुषों द्वारा प्रयुक्त वस्त्राभूषणः-

उल्लेखनीय है कि यह "लांगूल" केवल वानर जाति के पुरुषों के ही लगाई जाती है। उनकी स्त्रियां तारा, रूमा आदि की नहीं।

इसी विसंगति द्वारा यह संशय रहित प्रमाण मिलता है कि केवल योद्धा पुरुष वर्ग ही इस वस्त्राभूषण का युद्ध की साज–सज्जा में प्रयोग करते थे।

---

2 परमहंस स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती कृत "श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणम" के सुन्दरकांड से उद्धृत (पृष्ठ ४१३)

thearyasamaj.org

एक अन्य आश्चर्यजनक तथ्य

हमने बहुत ध्यान से प्रचलित चित्रों को सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया तो पाया कि यह बहु–चर्चित पूंछ बंदर की है भी नहीं। हम सभी सहमत होंगे कि बंदर की पूंछः–

1. न इतनी लंबी होती है।
2. न ही उसके अंत में बालों का गुच्छा होता है।
3. न ही बंदर की पूंछ इस प्रकार से "S" के आकार में ऐंठी हुई होती है।
4. इस प्रकार की पूंछ 'सिंह' की होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों व प्रमाणों के सम्यक अध्ययन व मनन से यही निष्कर्ष निकलता है कि चित्रकार स्वयं भी हनुमान को बंदर नहीं मानते हैं। सारी आकृति दो पैरों पर खड़ें शूरवीर योद्धा मनुष्य की ही लगती है।

thearyasamaj

०८

हनुमान जी के ऋणी कौन?

पिछले अध्यायों में हमने जाना कि रामायण में श्री राम से प्रथम मिलन के उपरान्त हनुमान जी ने वाली, सुग्रीव, तारा, रूमा, अंगद, राम, सीता, विभीषण, भरत एवं लक्ष्मण आदि को यथासमय भरपूर सहयोग किया तथा उन सबके जीवन को उत्तम दिशा दी।

हमारा मानना है कि ये सभी पात्र, उनके जीवन में आई विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर नवजीवन की ओर बढ़ पाने में हनुमान जी के ऋणी हैं।

आइए, हम एक–एक कर प्रत्येक पात्र के ऋणानुबंध को सरल भाषा में समझने का प्रयास करते हैं।

सुग्रीव

वाली द्वारा मायावी नामक राक्षस को मारने के घटनाक्रम में वाली द्वारा सुग्रीव निष्कासित होने पर, अपनी जान बचाकर ऋष्यमूक पर्वत की शरण लेता है।

उसकी पत्नी रूमा भी उसके साथ नहीं जा पाती। तब हनुमान जी वाली के महामंत्री पद को छोड़कर, निर्बल व निष्कासित सुग्रीव से मित्रता रखने का निर्णय करते हैं। तुलसीदास जी के शब्दों में वे 'कुमति निवार सुमति के संगी' सिद्ध होते हैं। सुग्रीव से श्रीराम की सुदृढ़ मैत्री कराने का श्रेय भी हनुमान जी को ही है।

सुग्रीव के सेनापति के रूप में, श्रीराम की पत्नी सीता की खोज में प्रमुख सहयोगी की उन्हीं की भूमिका है। श्रीराम द्वारा वाली–वध के पश्चात् वही हनुमान सुग्रीव का राज्यभिषेक करवाते हैं। तुलसीदास जी ठीक ही कहते हैं:–

"तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा।"

श्रीहनुमानचालीसा

thearyasamaj.org

अंगद

वाली के पुत्र अंगद को पिता के वध के पश्चात् जीवन–दान मिला तथा हनुमान जी ने ही सुग्रीव के राज्य में अंगद को युवराज घोषित करवाया। कालांतर में अंगद ने सीता की खोज में सहयोगी बन लंका में रामदूत की भूमिका निभाई।

तारा

तारा वाली की पत्नी तथा सुषेण वैद्य की बेटी थी। बाली ने मृत्यु से पूर्व अंगद की माता तारा के विषय में सुग्रीव से कहा था,

"सुषेणदुहिता चेयमर्थ सूक्ष्मविनिश्चये।
औत्पातिके च विविधे सर्वतः परिनिष्ठिता।।" २२.१३

"यदेषा साध्विति ब्रूयात् कार्यं तन्मुक्तसंषयम्।
नहि तारामतं किंचिदन्यथा परिवर्तते।।" २२.१४

वाल्मीकि रामायण, किष्किंधाकांड

"सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सर्वथा निपुण है। जिस कार्य को यह अच्छा बताए उसे निशंक होकर करना।"

वाली का प्राणांत होने के पश्चात् हनुमान जी ने ही तारा को प्रतिष्ठा व सम्मान दिलाया, अतः तारा भी हनुमान जी की ऋणी हुई।

रूमा

वाली द्वारा सुग्रीव के निष्कासन पर वाली के महल से सुग्रीव की पत्नी रूमा सुग्रीव के साथ नहीं जा सकी थी। वाली छोटे भाई की पत्नी के साथ बलात् अपनी पत्नी के समान व्यवहार करने लगा

था जिस घोर पाप के कारण ही दंडस्वरूप श्रीराम ने उसका वध किया।

वाली–वध के पश्चात् रूमा ने पुनः अपने पति को व रानी पद को प्राप्त किया। यह सब हनुमान जी द्वारा श्रीराम–सुग्रीव मित्रता कराने के फलस्वरूप ही संभव हो सका।

लक्ष्मण

लंका में श्रीराम – रावण युद्ध में मेघनाद के ब्रह्मास्त्र के संधान द्वारा जब लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं और मूच्छित पड़े भाई को देखकर श्रीराम 'व्याकुल हो जाते हैं तथा अनेक प्रयासों के पश्चात् भी उनकी चेतना नहीं आती, तब सुषेण वैद्य को बुलाया जाता है जो लक्ष्मण जी को बचाने के लिए द्रोणगिरि पर्वत से संजीवनी बूटी लाने के लिए कहते हैं। निर्दिष्ट समयावधि में संजीवनी बूटी लाने का सामर्थ्य केवल ज्ञानवान् व बलवान सेवक हनुमान में ही था।

हनुमान जी द्वारा हिमालय पर्वत से लाई गई संजीवनी बूटी से लक्ष्मण के प्राण बचे। अतः जीवन दान मिलने से लक्ष्मण जी भी हनुमान के ऋणी हुए।

भरत

श्रीराम के वनगमन के बाद अयोध्यावासी नियम से उपवास करने लगे।

"राम दरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास।
तजि-तजि भोजन भोग सुख जिअत अवधि की आस।।"

रामचरितमानस, अयोध्याकांड दोहा ३२२

अब श्रीराम की वनवास की अवधि समाप्त हो रही है। केवल

एक दिन शेष रह गया है। ऐसा सोचते हुए भरतजी भी नंदीग्राम में कुशा के आसन पर बैठे हुए अत्यंत व्याकुल हो प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"रहेउ एक दिन अवधि अधारा, समुझत मन दु:ख भयउ अपारा।"

रामचरितमानस, उत्तरकांड, ३.१

भरत जी यह भी सोच रहे हैं कि आज श्रीराम नहीं आए तो अयोध्यावासी मर ही जाएंगे। यह सोचकर महात्मा भरतजी स्वयं भी जब अपने शरीर का त्याग करने की सोच रहे हैं:–

"बीते अवधि रहहिं जो प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना।।"

रामचरितमानस, उत्तरकांड ३.४

उसी समय हनुमान जी अयोध्या में प्रवेश कर भरत को देख रहे हैं–

"बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात।।"

रामचरितमानस, उत्तरकांड १ (ख)

हनुमान जी ने भरत जी के समक्ष प्रस्तुत होकर श्रीराम के आगमन का समाचार सुनाया–

"जासु विरह सोचहुं दिन राती, रटहुं निरंतर गुनगन पांती।
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत, सीता सहित अनुज प्रभु आवत।।"

रामचरितमानस, उत्तरकांड १.२

"जिनके विरह में आप निरंतर सोचते रहते हैं व गुणों को रटते रहते हैं वही प्रभु शत्रु को रण में जीतकर सीताजी व लक्ष्मणजी सहित आ रहे हैं।"

भरत जी सहित सभी अवधवासी ऐसे प्रसन्न हुए जैसे उन्हें प्राणदान मिल गया हो। इस प्रकार न केवल भरतजी अपितु समस्त अयोध्यावासी भी हनुमान के ऋणी हुए।

विभीषण

विभीषण रावण के सबसे छोटे भाई थे। राक्षसकुल में जन्म लेने पर भी वे भगवद्भक्ति व धर्माचरण में अनुरक्त थे। सीता–हरण के पश्चात् हनुमान जब माता जानकी की खोज में लंका में आए तब उन्होंने तुलसी के पौधों से युक्त 'राम-नाम' से अंकित विभीषण का घर देखा तथा प्रातःकाल की अमृतबेला में विभीषण जी के मुख से राम–नाम सुनकर हनुमान जी को सुखद आश्चर्य हुआ। दो रामभक्तों का मिलन हुआ और परस्पर मैत्री संबंध स्थापित हुआ।

रावण ने जब सीता जी का हरण किया तब विभीषण ने पराई स्त्री के हरण को महापाप बताते हुए सीताजी को श्रीराम को लौटाने का आग्रह किया था, परन्तु रावण ने उसकी बात नहीं मानी। इसी प्रकार जब श्रीराम ने सेना सहित लंका पर चढ़ाई कर दी तब भी रामभक्त विभीषण ने पुनः सीता को लौटाकर युद्ध की विभीषिका को टालने की रावण से गुहार की थी।

"तात चरन गहि मांगऊँ। राखहु मोर दुलार।।
सीता देहु राम कहुं, अहित न होइ तुम्हार।।"

रामचरितमानस, सुंदरकांड ४०

परंतु रावण ने यह सुनकर विभीषण पर क्रोध कर उसे अत्यंत लांछित ही किया और लंका छोड़ने का आदेश दिया। विभीषण आकाशमार्ग से आकर तब श्रीराम के शरणागत हुए।

विभीषण हनुमान जी से मित्रता के कारण ही श्रीराम के विश्वास पात्र बन सके अन्यथा शत्रु राजा राक्षस रावण के भाई होने के नाते रामभक्त होते हुए भी उनका श्रीराम का विश्वासपात्र बनना संभव नहीं था।

श्रीराम के पूछने पर हनुमान शरणागत विभीषण को आश्रय

thearyasamaj.org

देने के पक्ष में निम्न प्रकार तर्क प्रस्तुत करते हैं:–

"एष देषच्च कालच्च भवतीह यथा तथा।
पुरुषात् पुरुषं प्राप्य तथा दोषगुणानपि।।" १७.७७
"दौरात्म्यं रावणे दृष्ट्वा विक्रमं च तथा त्वयि।
युक्तमागमनं ह्यत्र सदृषं तस्य बुद्धितः।।"

वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड १७.७८

"उसके यहां आने का यही उत्तम देश व काल है। वह एक दुरात्मा के पास से चलकर एक श्रेष्ठ पुरुष के पास आया है। रावण में दुष्टता और आपमें पराक्रम देखकर उसका आपके पास आना सर्वथा उचित व उत्तम बुद्धि के अनुरूप है।"

आगे फिर कहते हैं कि:–

"उद्योगं तव सम्प्रेक्ष्यं मिथ्यावृत्तं च रावणं।
बालिनं च हतं श्रुत्वा सुग्रीवं चाभिषेचितम्।। १७.६६
राज्यं प्रार्थयमानस्तु बुद्धिपूर्वमिहागतः।
एतावत तु पुरस्कृत्य युज्यते तस्य संग्रहः।। १७.६७

वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड

"आपके उद्योग व रावण के मिथ्याचार, वाली के वध व सुग्रीव के राज्याभिषेक को जान सुनकर, राज्य पाने की, पुरस्कार स्वरूप, अभिलाषा से ही यह यहां आया है। अतः उसका अपने समूह में संग्रह करना मुझे उचित जान पड़ता है।"

सहज ही समझ में आता है कि कोई राजनीति विशारद ही इस प्रकार के युक्ति–युक्त तर्क दे सकता है।

रावण–वध के पश्चात् विभीषण का लंका के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। तुलसीदास श्रीहनुमानचालीसा में इसकी पुष्टि इस प्रकार करते हैं:–

"तुम्हरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।"

श्रीहनुमानचालीसा

इस प्रकार हनुमान से मैत्री के कारण ही विभीषण भी हनुमान के ऋणी हो गए।

सीता

श्रीराम के वनवास की अवधि में रावण द्वारा सीता–हरण तथा हनुमान द्वारा सीता की खोज को ही हम रामायण की प्रमुख घटनाएं कह सकते हैं।

अशोक वाटिका मे सीता को 'माता' की संज्ञा देते हुए हनुमान जब श्रीराम की मुद्रिका देते हुए उनके समक्ष रामदूत के रूप में प्रस्तुत हुए तो सीता जी भाव विभोर हो गईं–

"रामदूत मैं मातु जानकी, सत्य सपथ करूणा निधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी, दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी।।"

रामचरितमानस, सुंदरकांड १२.७

प्रत्युत्तर में विश्वासपूर्वक सीताजी बोलीं,–

'कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।" १३
'आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना, होहु तात बल सील निधाना।।"

रामचरितमानस, सुंदरकांड १६.१

इस प्रकार रामदूत के रूप में हनुमान द्वारा प्रथम बार सीता जी को रामजी की जानकारी मिली। यह आश्वस्ति भी हुई कि अब जल्दी ही श्रीराम लंका में आकर रावण का वध कर मुझे यहां से मुक्त कराएंगे। वे मन ही मन हनुमान की आभारी हुईं।

इसके पश्चात् राम–रावण युद्ध में जब अन्य राक्षसों सहित रावणवध का कार्य संपन्न हो जाता है तब हनुमान ही सर्वप्रथम

thearyasamaj.org

श्रीराम–विजय की सूचना माता जानकी को देते हैं–

"सब विधि कुसल कौसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा।।"

रामचरितमानस लंकाकांड १०६.४

सीता जी अपने अंतर में हर्षित तथा हनुमान के प्रति ऋणी भाव रखते हुए कहती हैं–

"अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा।।"

रामचरितमानस लंकाकांड १०६.७

श्रीराम

पंचवटी में सीता–हरण के पश्चात् श्रीराम का ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से संपर्क हो जाता है। इस राम–हनुमान मिलन के पश्चात् माता जानकी की खोज से लेकर, बाली वध, सुग्रीव राज्यभिषेक, विभीषण से मैत्री व सहयोग, लक्ष्मण मूर्च्छा तथा अन्य अनेकों घटनाओं में निरभिमानी, नीति–विशारद, निर्लेप, अतुलित बलशाली तथा पूर्व वर्णित अगणित गुणों के द्वारा श्रीराम के अनन्य सेवक के रूप में हनुमान ने अभूतपूर्व सहयोग किया। कालांतर में अयोध्या वापिस लौटकर राज्याभिषेक के समय श्रीराम स्वयं कहते हैं–

"सुनु कपि तोहि समान उपकारी, नहिं कोई सुर-नर-मुनि-तनधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा, सनमुख होई न सकत मन मोरा।।"

३१. ३

"सुन सुत तोहि उरिन मैं नांही, देखऊं करी विचार मन मांहि।।"

रामचरितमानस, सुंदरकांड ३१.४

हनुमान जी भी विभीषण के ऋणी

लंका में विभीषण हनुमान जी के सहयोगी बने, उन्होंने सीताजी

thearyasamaj.org

के निवास का पता बताया। इसी प्रकार जब हनुमान–मेघनाद युद्ध में हनुमान जी रामदूत बनकर मेघनाद के ब्रह्मपाश में बंधकर रावण के समक्ष प्रस्तुत हुए, तब रावण हनुमान को प्राणदंड देना चाहता था। उस समय विभीषण ने 'दूत को अवध्य' बताकर कोई और दंड देने की बात कहकर हनुमान के प्राणों की रक्षा की। यहां पर हनुमान विभीषण के ऋणी हुए।

इस ऋण–भार से भी हनुमान शीघ्र ही विभीषण को राम की शरण व अंततः लंका का राज्य दिलाकर सर्वथा उऋण हो जाते हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से हम समझ सकते हैं कि रामायण के सभी उपरोक्त प्रमुख पात्र तथा किष्किंधा, लंका व अवधपुरी के भी सभी निवासी उनके ऋणी हो गए।

अंततः हम यही निष्कर्ष निकाल पाते हैं कि उनके ऋणी सभी हैं परंतु वह किसी के भी ऋणी नहीं हैं।

"हनुमान सम नहिं बड़भागी, नाहिं कोउ राम चरन अनुरागी।।"

रामचरितमानस, उत्तरकांड ४९. ४

●●●

thearyasamaj.org

०९

हनुमान–एक अनुपम प्रबंधक

यदि हम आज की परिस्थितियों का अवलोकन करें तो निश्चित रूप से हनुमानजी से अनुपम प्रबंधन के अनेक गुण ग्रहण किए जा सकते हैं। सुंदरकांड में वर्णित समस्त घटनाओं में सफलता प्राप्ति के लिए हनुमानजी की किसी भी परिस्थिति में "चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता" परिलक्षित होती है जो कि कुशल प्रबंधन की प्रथम आवश्यकता है।

वर्षों की दासता के कालखंड ने हम भारतीयों को सामान्यतया परमुखापेक्षी बना दिया है। हम सभी को यह एक अभ्यास ही हो गया है कि विज्ञान, कृषि, सुरक्षा, चिकित्सा व प्रबंधन (management) आदि सभी शिक्षाओं के लिए विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को विदेशी विद्वानों को आदर्श मानकर उन्हीं की पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा करते हैं।

यदि अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर हम थोड़ा भी विचार करें तो हम पाएंगे कि श्रीहनुमान विष्व के सर्वश्रेष्ठ प्रबंधक के रूप में हमें दृष्टिगोचर होते हैं।

आइए ! हनुमान जी के इन अद्वितीय गुणों को हम सुंदरकांड में वर्णित घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करते हैं।

१. ज्ञान व कर्म के मिश्रण

किष्किंधा पुरी में ज्ञान है पर कर्म नहीं,
लंकापुरी में कर्म है पर ज्ञान नहीं।
दोनों स्थानों पर हनुमान ज्ञान एवं कर्म को संयुक्त रूप से धारण करने वाले सिद्ध हुए हैं।

२. सदा प्रसन्न

कितनी भी विषम परिस्थिति आई, हनुमान कभी निराश नहीं हुए, वे सदा प्रसन्न रहते हैं, अन्य सभी पात्र कभी न कभी विलाप करते रहे हैं।

३. सदा विजय के लिए आश्वस्त

वे कर्मठ कर्मयोगी होने से सदा सफलता प्राप्त करने के प्रति आश्वस्त रहे। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो महाभारत युद्ध में समय–समय पर अर्जुन भी घबराया व भ्रमित हुआ था, तब श्रीकृष्ण ने उसे संभाला था।

परंतु हनुमान जी के साथ ऐसा एक भी अवसर नहीं आया। उन्होंने तो सीता जी की खोज के समय निर्दिष्ट कार्य से कहीं अधिक कार्यों में सफलता प्राप्त की।

४. अतिशय आत्म-विश्वास

अपनी समस्या की चर्चा सफलता के पूर्व या पश्चात्–कभी नहीं करते। अतीव धैर्य से स्वयं हल ढूंढ़ते हैं।

५. सादा जीवन, उच्च विचार

सादा जीवन, उच्च विचार को ही हनुमान ने अपने जीवन का ध्येय बनाया। वह, अंग्रेजी की कहावत "Simple Living and high thinking" को पूर्णरूप से, अपने जीवन व व्यवहार में चरितार्थ करते हैं।

६. अत्यंत विनम्र

लंका के घटनाक्रमों में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त करने पर भी

स्वयं को तुच्छ स्वीकार करते हुए श्रीराम की ही महानता एवं कृपा की सराहना करते हैं। अपनी अभूतपूर्व सफलताओं का श्रेय स्वयं को न देकर अपने आराध्य श्रीराम को ही देते हैं।

७. सात्विक क्रोध

लंका प्रवेश के बाद अनेक राक्षसों, रावण के योद्धाओं पर किया गया उनका क्रोध सात्विक था, तामसिक नहीं। यदा–कदा, अन्यत्र भी उनके द्वारा किया गया क्रोध भी सदैव सात्विक रहा, तामसिक नहीं। ऐसे क्रोध को वेदों में 'मन्यु' कहा गया है।

८. व्यवहार निपुण

लाभ की आशा ही लोभ की ओर ले जाती है। रामकाज को अपना लक्ष्य बनाकर लंका में रामभक्त विभीषण को 'सखा' कहकर, फिर शीघ्र ही 'भ्राता' शब्द से संबोधित किया। अंततः वह परस्पर परिचय का आदान–प्रदान कर अभिन्न 'नाते' में बदल देते हैं।

९. लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ

'राम काज' को ही अपने जीवन का ध्येय माना और इसी के प्रति उनका पूर्ण समर्पण रहा,

"रामकाज कीन्हू बिना मोहि कहाँ विश्राम"।

इससे स्पष्ट होता है कि काम यदि 'पूजा' बन जाए तो 'जीवन एक आराधना तथा देह देवालय' बन जाता है। हनुमान ने अपने कर्मों से वास्तव में अपनी देह को देवालय बनाया।

thearyasamaj.org

१०. अमोघ बाण

हनुमान जी केवल रामदूत ही नहीं अपितु सफलता–रूपी अमोघ राम–बाण हैं। विभिन्न घटनाक्रमों से जुड़े अपने कार्यों में वे कभी भी अपने संपूर्ण जीवन में असफल नहीं हुए।

११. परिस्थिति अनुकूल व्यवहार

हम हनुमान के बहुरूप देखते हैं। यथा

"सूक्ष्म, विकट, विनम्र, रौद्र व भीम रूप"।

अर्थात् परिस्थिति की आवश्यकता अनुसार ही अपने व्यक्तित्व व व्यवहार में परिवर्तन करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता है।

यह बहुरूप व्यवहार में है, शरीर का आकार घटने बढ़ने के द्योतक नहीं होते।

१२. अद्वितीय संयम

- अखंड ब्रह्मचारी हनुमान सीता माता की खोज में रावण के अंतःपुर में अनकों स्त्रियों को अस्त–व्यस्त रूप में देखकर भी किंकर्त्तव्यविमूढ नहीं होते अपितु अपने मन पर पूर्ण संयम रखते हैं।
- अपनी उपस्थिति में ही रावण द्वारा सीताजी की भंयकर प्रताड़ना को देखकर भी, अपने लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए, किंचित् भी विचलित नहीं होते।

१३. मनोविज्ञान कुशल

सीता माता से किस भाषा में बात करनी है– इस पर सूक्ष्म विचार कर युक्तिपूर्ण आचरण करते हैं।

thearyasamaj.org

निष्कर्ष

जैसा कि मैंने पूर्व में निवेदन किया है, आपसे पुनः आग्रह है कि सुंदरकांड में वर्णित सभी घटनाओं व विभिन्न गुणों का निष्कर्ष रूप में अवलोकन करते हुए, उपरोक्त अतिरिक्त गुणों का समायोजन करें तो निश्चय ही हम श्रीहनुमान को संसार के "सर्वप्रथम व श्रेष्ठतम प्रबंधक" के रूप में जानकर निस्संदेह ही गौरवान्वित होगें।

मेरी सद्इच्छा एवं परामर्श भी है कि भारत के सभी Management Institutes श्रीहनुमान को अपने अध्ययन का विषय बनाएं एवं विदेशियों को भी प्रेरणा करें।
हमारा स्वाभिमान भी जागेगा और आत्म विश्वास भी जागेगा।

●●●

thearyasamaj.org

१०

विचारणीय
"यक्ष प्रश्न"

बंधुओं! हम आज सब 'सुंदरकांड' तथा 'हनुमान–चालीसा' का पाठ बहुत श्रद्धापूर्वक करते हैं। कुछ भक्त तो फल–प्राप्ति की इच्छा से भी उक्त पाठ करते हैं। क्या हम एक पशु के प्रति ऐसी श्रद्धा अर्पण कर सकते हैं?

इन प्रकरणों को विवेक बुद्धिपूर्वक पढ़ने से यह धारणा निष्चित हो जाती है कि हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद आदि बंदर रूपी पषु नहीं थे अपितु विद्वान् एवं बुद्धिमान, मनुष्य, शूरवीर योद्धा व वैभवषाली राजा थे।

विनम्र निवेदन

अंत में, हमारा सभी सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उपरोक्त वर्णित श्री हनुमान के समस्त गुणों, क्रिया–कलापों व अद्भुत ''अतुलित बलधाम, ज्ञान गुण सागर'' व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए, हृदय की गहराईयों से सोचें कि क्या वास्तव में हमें उनके प्रति, हमारे प्रचलित दृष्टिकोण व मान्यता में संशोधन करने की आवश्यकता नहीं हैं? क्या निस्संदेह हम उनके प्रति, अन्याय नहीं कर रहे हैं? हमें निरतंर स्वयं से यह प्रश्न करते हुए इसका समाधान स्वयं ही खोजना होगा। हमारा कर्त्तव्य है कि वेदों के महान् विद्वान्, महाबली, ब्रह्मचारी, तपस्वी, श्रीरामचंद्र के परममित्र व सहायक, श्रीहनुमान जी का उपहास और अपमान न करें।

किसी भी बंदर को देखकर उसे हनुमान के रूप में देखना वा बताना असावधानी व अन्याय की पराकाष्ठा है।

●●●

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– महर्षि बाल्मीकि प्रणीत
खंड प्रथम व द्वितीय
प्रकाशक–गीताप्रेस गोरखपुर

2. श्रीरामचरितमानस– श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित
प्रकाशक – गीताप्रेस गोरखपुर

3. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्– अनुवादक, संपादक व टिप्पणिकर्ता
परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द
सरस्वती द्वारा लिखित
प्रकाशक– विजय कुमार गोविंदराम
हासानंद, दिल्ली

4. श्रीहनुमानचालीसा– श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित
प्रकाशक – गीताप्रेस, गोरखपुर

5. मात कैकेयी– हिमालय के योगी मौनी बाबा द्वारा
लिखित
प्रकाशक – श्रीकृष्णा प्रिंटर्स, दिल्ली

6. सदा सफल हनुमान– डा. विजय अग्रवाल द्वारा लिखित
प्रकाशक – मंजुल पब्लिशिंग हाऊस,
भोपाल

7. शुद्ध रामायण– आचार्य प्रेमभिक्षु द्वारा रचित
प्रकाशक – सत्य प्रकाशन, मथुरा

8. अन्यान्य प्रासंगिक ग्रंथ

thearyasamaj.org

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन–कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर ।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि–पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्र के काज संवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु–संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम–जनम के दुख बिसरावै।।
अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि–भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।